वर्ष 7, अंक 12 इलाहाबाद सितम्बर 2008

विश्व स्नेहसमाज

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

कीमत 5 रुपये

तीन कहॉनिया

आरक्षण, अल्पसंख्यंक और आतंक

हिंदी: कल, आज और कल

जन्म दिवस की हार्दिक बधाईयां

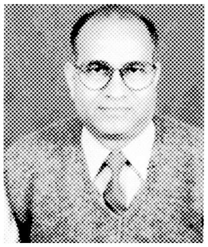

श्री श्याम विद्यार्थी,

वरिष्ठ निदेशक, दूरदर्शन केन्द्र, इलाहाबाद को उनके जन्म दिवस पर हार्दिक बधाईयाँ

जन्म दिवस की हार्दिक बधाईयां

विजय लक्ष्मी विभा

अध्यक्ष, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, व वरिष्ठ लेखिका को उनके जन्म दिवस पर हार्दिक बधाईया.

रचनाएं आमंत्रित है

ए आग कब बुझेगीः

इसमें आरक्षण/भ्रष्ट्राचार/दहेज/जातिवाद/नारी शोषण/ राजनीति से संबंधित आलेख/कविताएं/कहॉनिया/लघुकथाएं/व्यंग्य रचनाएं/संस्मरण आमंत्रित है. इस बात विशेष ध्यान रक्खें कि रचनाएं १५०० शब्दों से अधिक की न हो. सचित्र जीवन परिचय एक रचना तथा २५०/-रुपये अथवा दो रचनाएं ५००/- रुपये सहयोग राशि के साथ

अंतिम तिथि : ३० नवम्बर २००८

के साथ आमंत्रित है. अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए जवाबी टिकट लगे लिफाफे के साथ लिखें/भेजें-आप अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता सं०:एस.बी. 538702010009259 में सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के नाम से भी जमा कर सकते है अथवा धनादेश/डी.डी./चेक सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते है.

प्रकाशन हेतु सम्पर्क करें

अपने काव्य संग्रह, कहॉनी संग्रह, आलेख संग्रह आदि प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षणः

१.मात्र लागत मूल्य पर
२.विक्री की व्यवस्था
३.प्रचार प्रसार की व्यवस्था
४.विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें:

प्रसार सचिव
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011
ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com

कल, आज और कल भी उपयोगी

विश्व स्नेह समाज

वर्षः७ अंकः१२सितम्बर०८, इलाहाबाद

प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संरक्षक सदस्यः
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई
डी.पी.उपाध्याय, इलाहाबाद

सम्पादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसीः 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

आवश्यक सूचनाः

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

सभी सम्मानित सदस्यों से आग्रह है कि अगर पत्रिका का अंक आपको उक्त माह की 15 तारिख तक प्राप्त न हो तो कृपया हमें एक पोस्ट कार्ड से सूचित करने की कृपा करें अथवा पत्रिका के कार्यालय को सूचित करें.

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

एक प्रतिः रु०५/–
वार्षिकः रु० ६०/–
विशिष्ट सदस्यः रु० १००/–
द्विवार्षिकसदस्यः रु०११०/–
पाच वर्ष–रु०२७०/–
आजीवन सदस्यः रु०१००१/–
संरक्षाक सदस्यः रु० २५००/–

अंदर के पन्नों में:

हिन्दीः कल, आज और कलः ६

राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्कभाषा व मातृभाषा के रूप में हिंदीः ७

राष्ट्रभाषा के निर्माण में अमीर खुसरो का योगदानः १०

आरक्षण, अल्पसंख्यंक और आतंकः ११

अपनी बात–4
प्रेरक प्रसंग–5
अध्यात्मः 15
कहॉनीः कोख–17
उधार का परिधान भारतीय संविधान–19
व्यंग्य–चपरासी वाइस एसोसिएशन– 21
सफल व्यक्तित्व–23
स्नेहबाल मंच–24
कहॉनी–25
कविताएं–09, 10, 18, 22, 25, 26
साहित्य समाचार–08,14, 16, 20,27
स्वास्थ्य–28
चिट्ठी आई है–29
लघु कथाएं–30
पुस्तक समीक्षा–31

अपनी बात

नकली दूधों का बढता व्यापार

वैसे तो महानगरों में दूध की कमी बारहों महीने रहती है. लेकिन गर्मीयों में खासकर दूध की काफी हो जाती है. गर्मीयों में चार से आठ रुपये प्रति लीटर दाम बढ़ने के बाद भी लोगों को दूध नहीं मिल पा रहा है. उत्तर प्रदेश के महानगरों में तो पराग डेयरी जाड़े में संग्रहित पाउडर से दूध बनाकर आपूर्ति सामान्य रखने की कोशिश में है पर मजबूरी यह है कि डेयरी को भी ग्रामीण क्षेत्रों से पर्याप्त मात्रा में दूध नहीं मिल पा रहा है. इस मौके को भुनाने के लिए मिलावट खोर सक्रिय हो गये है. यह धंधा जोरो पर चल रहा है. यह कार्य अधिकांशत उन स्थानों पर होता है जहां दूध की पेराई कर मक्खन निकाला जाता है. एक लीटर शुद्ध दूध में मिलावट कर उसे आठ से दस लीटर कर दिया जाता है. इसमें मुश्किल से 35 से 40 रुपये खर्च आता है जबकि दस लीटर दूध 200 से 250 रुपये आसानी से बिक जाता है. मिलावटी दूध की ज्यादातर खपत चाय की दुकानों, होटलों, बस स्टेशनों, रेलवे स्टेशनों में हो रहा है क्योंकि इन स्थानों पर दूध की मांग ज्यादा है. दूध से बनने वाले खाद्य पदार्थो जैसे पनीर, छेना, मलाई और मिठाई बनाने में भी ज्यादातर स्थानों पर मिलावटी दूध का खूब प्रयोग हो रहा है.

मिलावटी दूध का कारोबार करने वाले एक दो दुकानदारों से दोस्ती करने पर इसके बनाने की प्रक्रिया में बारे जो जानकारी मिली वह निम्नवत है–

एक बड़े बर्तन में रिफाइंड तेल को फेंट कर उसमें थोड़ा सफेद डिटरजेंट पाउडर या अरारोट मिलाया जाता है. इस घोल में यूरिया, कास्टिक सोडा, चीनी और नमक मिलाया जाता है. जब घोल तैयार हो जाता है तो उसमें दूध की मिलावट की जाती है. एक लीटर शुद्ध दूध में आठ लीटर पानी मिलाकर उसे इस घोल में मिला दिया जाता है. बस तैयार हो जाता है, सफेद और गाढ़ा दिखने वाला मिलावटी दूध. रिफाइंड तेल का उपयोग चिकनाई, डिरजेंट का झाग बनाने और अरारोट की मिलावट सफेदी लाने के लिए की जाती है. नमक और चीनी काफी कम मात्रा में दूध जैसा स्वाद बनाने के लिए मिलाई जाती है. कास्टिक सोडा मिला होने के कारण यह दूध प्राकृतिक दूध की अपेक्षा ज्यादा देर में फटता है. कुछ दुध यूरिया मिलाकर भी बनते है.

मिलावटी दूध को पहचान करने के लिए पांच से दस मिलीलीटर दूध में एक ग्राम अरहर या सोयाबीन का आटा मिलाकर उसे अच्छी तरह से हिलाएं और पांच मिनट के लिए छोड़ दें. इसके बाद घोल को फिल्टर पेपर से छानकर छने हुए घोल में एक चुटकी हल्दी मिलाएं. अगर घोल का रंग लाल हो जाता है तो साफ है कि दूध में मिलावट की गई है. अगर दूध में यूरिया मिला होगा तो इस घोल में दो बूंद अमोनिया डालने पर घोल का रंग लाल हो जाएगा.

डाक्टरों का कहना है कि केमिकल मिला होने के कारण मिलावटी दूध सेहत के लिए काफी नुकसानदायक होता है. खास तौर से छोटे बच्चों के लिए. यूरिया और कास्टिक सोडा से शिशुओं के यकृत, हृदय और गुर्दे पर प्रभाव पड़ता है. कास्टिक सोडा श्वसन तंत्र, पाचन तंत्र और गालब्लैडर पर भी असर डालता है. इसलिए सेहत की रक्षा के लिए दुकान से खरीदते समय दुधिए से लेते वक्त सर्तकता रखनी जरुरी है.

दूध में मिलावट पाए जाने पर दूधिया के खिलाफ आई.पी.सी की धारा 272 और 276 के अंतर्गत कार्यवाही की जा सकती है.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

प्रेरक प्रसंग

स्तम्भः क्या करें, क्या न करें

शादी के कार्डः हर वर्ष शादियॉ होती है. तदानुसार कार्ड बनते हैं. एक से एक अच्छे और सुन्दर कार्ड देखने को मिलते है. शादी समाप्त होते ही कार्ड का जीवन समाप्त हो जाता है और वह रद्दी की टोकरी में चला जाता है. यह गलत है. कितने मेहनत से कार्ड बनता है. यह बहुत कम लोग जानते हैं. कार्ड के बारे में एक अनुमान बनाना, उसको कम्प्यूटर पर छापना, और उसके पश्चात कार्ड का रंगीन मुद्रण, सब कुछ एक परिकल्पना और मेहनत की बात है. कई लोगों की रोजी-रोटी इससे जुड़ी हुई है. इसकी सालाना प्रर्दशनी लगायी जानी चाहिए.

डॉ. नरेन्द्र नाथ लाहा, ग्वालियर, म.प्र.

+++++++++++++++++++++++++++

येनास्य पितरों याताः येन याताः पितामहाः
तेन यायात् संता मार्ग तेन गच्छन्न रिष्यति।।
मनु+/१७८

पिता-पितामह के द्वारा बताए गए मार्ग पर चलकर ही दुःखों एवं अभावों सें मुक्ति मिलती है. वही सन्मार्ग कहा जाता है.

यथा वायुं समाश्रित्य वर्तन्ते सर्वजन्तवः।
तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्तन्ते सर्व आश्रमाः।।
मनुस्मृति ३/७७

दान तथा अन्न से पालन करने का भार गृहस्थ पर है. उन्हें निःस्वार्थ भाव से तीनों आश्रमों की सेवा करनी है ब्रहमाचारी, वानप्रस्थी और सन्यासी के लिए गृहस्थ का द्वारा उसी प्रकार खुला रहना चाहिए, जिस प्रकार नदी का जल-तट सबके लिए खुला रहता है तथा वायु का उपयोग समस्त प्राणियों को समान रुप से प्राप्त होता रहता है.

असम्मानात्तपोवृद्धिः सम्मानातु तपः क्षयः।।

असम्मान से ही तप की वृद्धि होती है और सम्मान से तप का क्षय होता है.

प्रेम न बारी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा प्रजा जेहिरुचै, सीस देइ ले जाय।।

प्रेत तो क्रय-विक्रय की वस्तु नहीं हो सकती है. निष्काम-प्रेम की कसौटी त्याग है, समर्पण है. एक बार संत कबीर से लोगो ने ऐसे निष्काम-प्रेम के विषय में पूछा तो उन्होंने सहज उत्तर दिया-

कबिरा कबिरा क्या करै, जा जमुना के नीर।
इक इक गोपी प्रेम में, रमते कोटि कबीर।।

चाहे निगुण संत हो या सगुण उपासक हो, सबों ने प्रेम का सार काम-वासना एवं इन्द्रिय-भोग से रहित प्रेम ही कहा है. **डॉ० रमाशंकर पाण्डेय**,जमशेदपुर, झारखंड

+++++++++++++++++++++++++++++++++++

प्र तार्यायुः प्रतरं नवीयः।

हे भगवन! हमें उतरोत्तर समुन्नतिशील नवीनतर जीवन में अग्रसर कीजिए।

अष्टौ गुणाः पुरुषं दीपयन्ति। प्रज्ञा च कौल्यं च दमः श्रुतं च।।
पराक्रम श्चाबहुभाषिता च। दानं यथा शक्ति कृतज्ञता च।।

मनुष्य के जीवन में गुणों की गरिमा है. विदुर ने राजा धृतराष्ट को समझाते हुए कहा कि इंसान अगर अपने अंदर से आठ गुण प्रकट करे तो संसार का प्रिय बन जाएगा और परमात्मा की अनंत कृपा भी उसे मिल जाएगी.

१.प्रज्ञा बुद्धि-जिसे हम सुमति कहते है. विचार-आचार-व्यवहार का संगम है. विचार महान बनाने के लिए महान पुरुषों का संग कीजिए, सत्संग कीजिए और शास्त्रों को पढ़िए.
२. कोल्यम-कुल संस्कार-अपने कुल के महान संस्कारों को उजागर कीजिए।
३. दम-विवेक का ब्रेक-अपने उपर नियंत्रण रखना
४. श्रुतम-शास्त्र ज्ञान और सत्संग
५. पराक्रम- जिन्दगी की समस्याओं का हिम्मत व विवेक से सामना करना चाहिए.
६.बहुभाषिता-बहुत बोले नहीं-बोलने से शक्ति नाश होती है.
७. दान-सामर्थ्यानुसार दान करें।
८. कृतज्ञता-प्राप्त उपकार के प्रति आभार प्रदर्शित करें

डॉ. बी.एल.टेकड़ीवाल, श्रीमती शांतिदेवी विश्वनाथ टेकरीवल फाउन्डेशन, मुंबई

आदाब अर्ज

रसिक रसीले मद भरे नयनों से कर बात,
अन्तरमन तक पैठते भिगो प्रेम रस गात।

* * *

कंचन किंकिण कामिनी काम क्रोध वपु मोह
पंक पतित पथ पे पड़ा परजीवी मन द्रोह।

पी.एस. भारती, बरेली, उ०प्र

हिन्दी दिवस पर विशेष

हिन्दी: कल, आज और कल

एस.बी.मुरकुटे, कर्नाटक

हमारे देश की राजभाषा हिन्दी है. इसका इतिहास अति प्राचीन है, क्योंकि हमारे देश में प्रचलित वैदिक संस्कृति प्राकृत अप्रभंश आदि हिन्दी के ही प्राचीन रुप कहे जा सकते है. हिन्दी के द्वारा ही सारा भारत एक सूत्र में पिरोया जा सकता है. इसी विचारधारा को अपनाकर महात्मा गांधी ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रुप में अपनाने का कार्यक्रम चलाया. हिन्दी जीवंत भाषा है. इसने अनेक देशी-विदेशी भाषाओं के शब्दों को आत्मसात किया है. भारत के सभी विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन नियमित रुप से हो रहा है. विदेशों में भी उनके विश्वविद्यालयों में हिन्दी का पठन-पाठन हो रहा है.

यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि आज भी अँग्रेंजी का वर्चस्व कायम है. राष्ट्र के हितचिंतक गॉधी, पटेल, दयानंद, राजाराम मोहनराय ने इसके उज्जवल भविष्य की कामना की थी. देश के साथ खिलवाड़ करने वाले अनेक नेताओं ने, अलगाववादी शक्तियों को अपनाने का अवसर प्रदान कर दिया. वोटों की राजनीति करने वाले भाषा और धर्म के नाम पर देश को बॉट रहे हैं. दो प्रतिशत अँग्रेजी वाले आज हमारे ऊपर शासन कर रहे है. अँग्रेजी के व्यामोह ने दिशाहीन बना दिया है. हिन्दी के विकास से ही अन्य भारतीय भाषाओं का विकास होगा. अँग्रेजी आती भी नहीं और जाती भी नहीं. गलत शिक्षा नीति हमें गलत रास्ते पर ले जा रही है. हिन्दी की रोटी खाने वाले भी हिन्दी के प्रति वफावदार नही है. अँग्रेजी के साथ रोजी-रोटी जुड़ी हुई है. इसलिए लोग अंग्रेजी का अध्ययन कर रहे है. लेकिन हमें निराश होने की आवश्यकता नहीं है. हिन्दी कल भी थी, आज भी है, और कल भी रहेगी. दक्षिण के लोग हिन्दी सीख रहे है. यदि हम अंग्रेजी के व्यामोह से लोगों को मुक्त नहीं करते है तो आने वाली पीढ़ी हमें माफ नहीं करेगी.

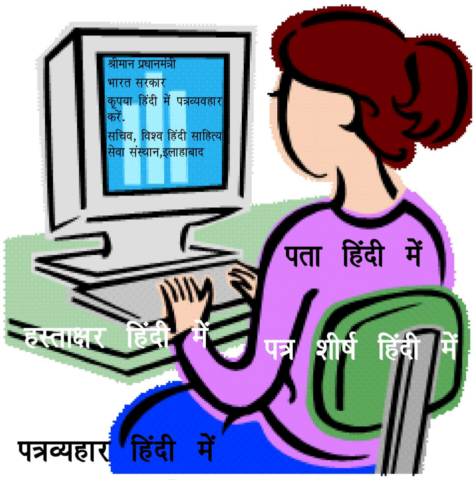

श्रीमान प्रधानमंत्री
भारत सरकार
कृपया हिंदी में पत्रव्यवहार करें.
सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,इलाहाबाद

भारत सरकार के तकनीकी तथा वैज्ञानिक शब्दावली आयोग ने तथा केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने हिन्दी में कार्य करने के लिए पारिभाषिक शब्दावली के साथ हिन्दी शिक्षण योजनाएँ बनाई है. अंग्रेजी बढ़ाना और पढ़ना आज एक फैशन बन गया है. जिस हिन्दी को सूर, कबीर, तुलसी और जायसी जैसे कवि मिलें हो उस हिन्दी को कौन मार सकता है. हिन्दी न कभी मरी है, न कभी मरेगी.

हमारी सरकारी शिक्षा एवं भाषा नीति के कारण आज हिन्दी दूसरे दर्जे की भाषा बन गयी है. लेकिन अँग्रेजी की गुलामी अब अधिक दिन तक नहीं टिकेगी. लोगों को आगे आना चाहिए और राजनैतिक गुलामी की तरह हिन्दी भाषा को गुलामी से मुक्त कराने की दिशा में प्रयास करना चाहिए. आज हमें प्रेमचन्द्र की भाषा की जरुरत है. इसके साथ हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु हिन्दी की अच्छी पुस्तकें प्रकाशकों को कम कीमत पर उपलब्ध कराना चाहिए. यह काम बिना सरकारी अनुदान के नहीं हो सकता. एक बात और कि हमें अपने बच्चों को अंग्रेजी के व्यामोह से बचाना चाहिए तथा हिन्दी को अपनाना चाहिए.

भाषा के नाम पर हमारे प्रदेशों का पुनर्निर्माण हुआ लेकिन उनका शासन उनकी भाषा में नहीं, अँग्रेजी के माध्यम से चल रहा है. आज कितने भी राजनैतिक दल है, जो आज शासन में है, या कल शासन में आने वाले हैं, सबके के सब अंग्रेजी के गुलाम है, उनमें हिन्दी भाषा का प्रेम नाम मात्र का नही रह गया है. देश को बचाना है तो नयी राजनैतिक सोच और आचार-व्यवहार पैदा करना होगा. उनको पहली सीढ़ी के रुप में हिन्दी भाषा आंदोलन आरम्भ करना होगा और यह काम देश के प्रबुद्ध, विवेकशील और स्वाभिमानी लोग ही शुरू कर सकते है.

अपना हस्ताक्षर अपनी भाषा या हिन्दी में करें. आप अपनी चिट्ठियों पर पता अँग्रेजी में न लिखकर हिन्दी में लिखें, अपने निवास का नाम प्रादेशिक भाषा और हिन्दी में छपवॉए. अपना और अपनी संस्था का लैटरहैड प्रादेशिक भाषा और हिन्दी में छपवाएं. अपने बच्चों को प्रारंभिक शिक्षा अपनी मातृभाषा के माध्यम से विद्यालयों में दिलवाएं. विधानसभा और लोकसभा के निर्वाचन के समय उम्मीदवारों को वचनबद्ध करें कि वे चुने जाने के बाद सदन में अँग्रेजी का प्रयोग नहीं करेंगे और न सरकार को करने देंगें.

हिन्दी दिवस पर विशेष

राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्कभाषा व मातृभाषा के रुप में हिंदी

- भारत के अधिकांश प्रदेशों में अलग-अलग मातृभाषाएँ है. राष्ट्रभाषा के रुप में संस्कृत के बाद हिन्दी ने स्थान प्राप्त कर लिया है, इसमें कोई संदेह नही है.
- स्व० राजीव गॉधी ने बालकवि बैरागी से कहा था, 'बैरागी जी! परंपरा और तकनीक इन दोनों का विरोध कभी मत करिए. परंपरा हमें हमारे अतीत और विरासत की जानकारी देती है. तकनीक हमें वर्तमान में जीवित रखते हुए भविष्य में जीने का पाठ पढ़ाती है. आज कम्प्यूटर आपको अंग्रेजी का दोस्त लगता है, कल यही कम्प्यूटर आपको हिंदी का हितैषी और सच्चा मित्र लगने लगेगा. इससे दोस्ती करके देखिए.'

संतोष गौड़ राष्ट्रप्रेमी,राजस्थान

राष्ट्रभाषा किसी भी देश की संस्कृति की वाहक व जन-मन-गण के विचारों की अभिव्यक्ति का साधन व विकास का आधार होती है. समस्त लोक कलाएँ, लोक साहित्य, संस्कृति, सभ्यता व ज्ञान-विज्ञान राष्ट्रभाषा में ही संरक्षित होती है. राष्ट्रभाषा राज्यादेश से नहीं बनती बल्कि व्यवहारिक क्षमताओं व लोकमानस की स्वीकार्यता से अंगीकृत होती है. राज्यादेश से राजभाषा लागू की जाती है जिसे रातोराम बदला भी जा सकता है किन्तु राष्ट्रभाषा को राज्यादेश से लागू करना संभव नहीं है.

कोई भी भाषा सदियों के प्रयोग के बाद जब जनमानस की भावनाओं के प्रकटीकरण, लोकसंस्कृति, लोक सामर्थ्य, साहित्य व ज्ञान-विज्ञान के वहन करने में सक्षम हो पाती है. तभी वह राष्ट्रभाषा बनने की क्षमता अर्जित कर पाती है. जनमानस जैसे-जैसे उस भाषा को उपेक्षित कर किसी अन्य भाषा को व्यवहार में लाने लगता है, उसकी संस्कृति, साहित्य-कला व ज्ञान-विज्ञान अन्य भाषा में अभिव्यक्त होने लगते है, वैसे-वैसे राष्ट्रभाषा कमजोर पड़ती जाती है., संस्कृति विलुप्त होने लगती है या रुप परिवर्तित करने लगती है और दूसरी भाषा हजारों वर्षो के प्रयासों के बाद राष्ट्रभाषा का स्थान प्राप्त कर पाती है.

प्राचीन काल में हमारी राष्ट्रभाषा सस्कृत रही है. कालान्तर में वह स्थान हिन्दी ने लियाा है किन्तु आज भी हिन्दी संस्कृत के समकक्ष समृद्ध नहीं हो पाई है. जब भी हमें आवश्यकता पड़ती है. , हमें संस्कृत ग्रंथों का सहारा लेना पड़ता है. राजभाषा किसी भी राज्य के द्वारा घोषित राज-काज की भाषा होती है. राष्ट्रभाषा ही राजभाषा व सम्पर्क भाषा हो तो जनता को सुविधा रहती है. राजभाषा समय-समय पर बदलती रही है, उदाहरणार्थ संस्कृत, पाली, अपभ्रंश, फारसी व अंग्रेजी आदि. राजभाषा के अतिरिक्त विभिन्न प्रदेशों या जनपदों के मध्य सम्पर्क सम्बंधो के लिए जिस भाषा के रुप में विकसित करने के प्रयत्न किए जाते है, वह सम्पर्क भाषा कहलाती है.

भारत के अधिकांश प्रदेशों में अलग-अलग मातृभाषाएँ है. राष्ट्रभाषा के रुप में संस्कृत के बाद हिन्दी ने स्थान प्राप्त कर लिया है, इसमें कोई संदेह नही है. सम्पर्क भाषा व राजभाषा का प्रश्न अस्पष्ट है. एक प्रकार से कहें यह प्रश्न भाषा-राजनीति के गलियारें में फंस गया है. अंग्रेजी शासन काल में विदेशी सरकार ने अपनी भाषा को राजभाषा के रुप में थोप दिया था. चूॅकि शासन ब्रिटेन के पास था, इसलिए अंग्रेजी राजभाषा के रुप में लागू कर दी गई. शासक वर्ग ही राजभाषा का निर्धारण करता रहा है. स्वतंत्रता के बाद जनमानस में रची बसी भाषा हिन्दी को राजभाषा घोषित किया गया किन्तु अंग्रेजी को भी राजभाषा के स्थान से पदच्युत न किया जा सका. किसी राष्ट्र की दो राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती, जिस प्रकार एक म्यान में दो तलवार नहीं समा सकती. परिणामस्वरुप संविधान में हिन्दी को राजभाषा घोषित किये जाने के बावजूद अंग्रेजी राजभाषा का काम कर रही है. हिन्दी को राजभाषा घोषित निर्धारित अवधि अनिश्चित अवधि तक राजभाषा के रुप में कार्य करने देने की छूट देना भारी पड़ा और वह निर्धारित अवधि अनिश्चित काल में परिवर्तित हो गई. मुझे यह कहने में संकोच नहीं होता कि अंग्रेजी भारत की राजभाषा के पद पर सुशोभित है और हिन्दी उस पद को प्राप्त करने में संघर्षरत है किन्तु असफल होती हुई प्रतीत हो रही है. हिन्दी सरकारी आदेशों व अधिकारियों की प्रवृत्ति के कारण अनुवाद की भाषा बन चुकी है.

ऐसा नहीं है कि हिन्दी आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की अपेक्षाओं के अनुकूल नही हैं. हिन्दी का शब्द भण्डार अति

बृहद है. दस लाख शब्दों वाली भाषा हिंदी पर अंग्रेजी के ढाई लाख शब्द राज कर रहे है. शब्द संपदा व अपनी शब्द सृजन क्षमताओं के कारण हिंदी सभी विषयों के संरक्षण व अभिव्यक्तिकरण में सक्षम है. सामान्यतः हिन्दी की दुर्दशा के लिए दक्षिण भारत के विरोध को जिम्मेदार माना जाता है किन्तु यह गलत है. दक्षिण भारत में हिन्दी का विरोध केवल तमिलनाडु में किया जाता है वह भी केवल राजनीतिक कारणों से है. किन्तु हिन्दी भाषी प्रान्तों में अर्थात उत्तर भारत में लिखा अवश्य होता है कि यहॉ हिन्दी में भरी हुई पर्चियां स्वीकार की जाती है किन्तु सामान्यतः ऐसा होता नही है. विद्यालयों के प्राचार्य हिन्दी को बेकार विषय समझ कर छात्र-छात्राओं पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं. कुछ संस्था प्रधान तो अंग्रेजों की अवैध सन्तान होने को प्रमाणित करते हुए हिन्दी विषय को ही अपने विद्यालयों से समाप्त करने में लगे हुए है. उत्तर भारत में हिन्दी पाठ्यक्रम अ के स्थान पर पाठ्यक्रम ब को पढ़ाना कहॉ तक तार्किक है? हिन्दी साहित्य को उत्तर भारत के विद्यार्थी नहीं पढ़ेगे तो कौन पढ़ेगा? राजभाषा क्रियान्वयन समिति के नाम पर एक हिन्दी के कर्मचारी को लगा दिया जाता है कि वह फर्जी बैठके दर्शाकर कागजी खानापूर्ति करता रहें.

अंग्रेजी नहीं बोल पाने वाले व्यक्ति का आत्मविश्वास तोड़ दिया जाता है. लार्ड मैकाले की योजना पूर्णतः सफल रही है. अंग्रेजों के जाने के बाद भी भारत में अंग्रेजियत की हुकूमत जारी है. अंग्रेजियत के गुलाम मानसिकता के लोग ही उच्च पदों पर बैठे है. हिन्दी के बर्चस्व को जारी रखकर भारत की बड़ी जनसंख्या को हाशिये पर ढकेल दिये जाने का षडयंत्र चल रहा है. भारतीय संसद में किये जाने वाले कामकाज व दिए जाने वाले भाषणों का ही विश्लेषण किया जाय तो जाना जा सकता है कि हिन्दी ही नहीं समस्त भारतीय भाषाओं को पीछे ढकेलाजा रहा है. इस सन्दर्भ में पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी का कथन कि भारत की अपेक्षा न्यूयार्क में हिन्दी बोलना अधिक सुरक्षित है, भारतीय मानसिकता को स्पष्ट करने में अधिक सहायक है.

हिन्दी भारत में राजभाषा का स्थान प्राप्त नहीं कर सकी है और हम आकड़ों के जाल में उलझकर विश्व भाषा बनाने की कपोल कल्पनाएॅ करने लगे है. संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषाओं में हिन्दी को स्थान दिलाने के प्रयत्न करने लगे है. उनके इन प्रयत्नों पर उंगली उठाने का कोई मतलब नही है किन्तु बाहर जाने से पूर्व आवश्यक है कि हम अपने घर में हिन्दी को सम्मानजनक स्थान दिलायें. संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को स्थान दिलाने का हमारा दावा तभी दमदार होगा जब हम उसे भारतीय संसद विधानसभाओं व न्यायालयों में स्थान दिला सके. हमारे अधिनियम, अध्यादेश, नियम व उप-नियम मूलरुप से हिन्दी में बनने लगे और इस जुमले से पीछा छूटे, यदि अंग्रेजी व हिन्दी अनुवाद में कोई विरोधाभास पाया जाता है तो अंग्रेजी रुप ही मान्य होगा. यह निकट भविष्य में संभव नहीं दिखता. भाषा जब राजनीति का आधार बन जाये तो उस भाषा का विकास राजनेताओं के राजनीतिक दाव-पेंचों में उलझकर रह जाता है. वहीं यहॉ हो रहा है. वर्तमान में भारत का राजकाज किसी अधिकारिक भाषा के बिना चल रहा है क्योंकि जो अधिकारिक भाषा घोषित है उसमें काम नहीं होता और जिसमें काम होता है वह अधिकारिक राजभाषा घोषित नही है. यह बड़ी विचित्र स्थिति है.

राजभाषा के रुप में हिन्दी को भले ही मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा हो किन्तु एक सम्पर्क भाषा के रुप में हिन्दी का दिन-प्रतिदिन विकास हो रहा है. वैश्वीकरण के युग में जब कि

‘आप अपने सामने पृथ्वी का घूमता हुआ ग्लोब लेकर बैंठे. उसे चाहे पूरब से घुमाएं चाहे पश्चिम से, अपनी कलम से घूमते हुए ग्लोब पर लकीरें खींचते चले जाएं, आप देखेगें कि दुनियां भर के एक सौ दस देशों के विश्वविद्यालयों में किसी न किसी रुप में हिंदी पढ़ाई और सिखाई जा रही है.’ **प्रो. नागप्पा**

‘हिंदी अमरिका की सुरक्षा से जुड़ी भाषा है. अमरीका में इसकी अनिवार्यता हो गई है. यदि अमरीकी नहीं चेते तो भारत के नौजवान अमरीका की नौकरियों पर कब्जा कर लेगें. स्थिति को समझ लो.’ जार्ज बुश, अमरीकी राष्ट्रपति

मुक्ताकाश पावस काव्य संध्या

तरुण सांस्कृतिक चेतना समिति, समस्तीपुर, बिहार नें विश्वकवि विद्यापति की निर्वाण स्थली में पावस काव्य संध्या आयोजित की गई. इस अवसर पर कवि चॉद मुसाफिर, रामखेलावन भगत, सच्चिदानन्द पाठक, श्याम कृष्ण नारायण रंजन, आचार्य लक्ष्मी दास, हितलाल पाठक, शैलेन्द्र त्यागी, रामानुज चौधरी, महेन्द्र सरदार, शंकर अज्ञानी, सूर्यनारायण प्रसाद, दयानन्द शर्मा, अभिनव नीलेश, देवेन्द्र सिंह, डॉ० गगन देव चौधरी, आदि ने प्रमुख रुप से काव्य पाठ किया तथा सीताराम शेरपुरी ने संचालन किया.

उद्योग व व्यापार किसी भी देश के विकास का निर्धारण करने लगे हैं. जिसे भी बृहद भारतीय बाजार में पैर जमाने है, उसे हिंदी सीखनी ही होगी. सरकारी अधिकारी व राजनेता भले ही हिंदी को राजभाषा का दर्जा न दे पाए हो, हिंदी एक संपर्क भाषा के रुप में विकसित हो रही है. इतनी बृह हिन्दी भाषा भाषी लोगों को नजर अन्दाज करना किसी के बस की बात नही है. तकनीकी विकास के फलस्वरुप जब कम्प्यूटर का भारत में प्रवेश हो रहा था और लोग उसे लेकर तरह-तरह की आंशकाए व्यक्त कर रहे थे, तब एक दिन स्व० राजीव गॉधी ने बालकवि बैरागी से कहा था, 'बैरागी जी! परंपरा और तकनीक इन दोनों का विरोध कभी मत करिए. परंपरा हमें हमारे अतीत और विरासत की जानकारी देती है. तकनीक हमें वर्तमान में जीवित रखते हुए भविष्य में जीने का पाठ पढ़ाती है. आज कम्प्यूटर आपको अंग्रेजी का दोस्त लगता है, कल यही कम्प्यूटर आपको हिंदी का हितैषी और सच्चा मित्र लगने लगेगा. इससे दोस्ती करके देखिए.' और आज राजीव गांधी का कथन पूर्णतः सत्य सिद्ध हुआ है, आज धड़ल्ले से हिंदी में साफ्टवेयर विकसित हो रहे हैं. कंम्प्यूटर हिंदी पुस्तकों के प्रकाशन में भी पूर्ण योग दे रहा है.

हिंदी भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी बहुतायत में पढ़ी जा रही है. इस संबंध में कर्नाटक के सुप्रसिद्ध हिंदी सेवी प्रो. नागप्पा का वक्तव्य-'आप अपने सामने पृथ्वी का घूमता हुआ ग्लोब लेकर बैंठे. उसे चाहे पूरब से घुमाएं चाहे पश्चिम से, अपनी कलम से घूमते हुए ग्लोब पर लकीरें खींचते चले जाएं, आप देखेगें कि दुनियां भर के एक सौ दस देशों के विश्वविद्यालयों में किसी न किसी रुप में हिंदी पढ़ाई और सिखाई जा रही है.' श्री नागप्पा काा यह कथन हिंदी के विकास को रेखांकित करता है. यही नहीं औद्योगिक विकास के फलस्वरुप हिंदी के बढ़ते महत्व को अमरीकी राष्ट्रपति जार्ज बुश का यह कथन, 'हिंदी अमरिका की सुरक्षा से जुड़ी भाषा है. अमरीका में इसकी अनिवार्यता हो गई है. यदि अमरीकी नहीं चेते तो भारत के नौजवान अमरीका की नौकरियों पर कब्जा कर लेगें. स्थिति को समझ लो.' भली प्रकार स्पष्ट कर देता है.

हिंदी का विकास भरत के अहिंदी भाषी क्षेत्रों में ही नहीं, विश्व के अनेक देशो में हो रहा है. इतिहास साक्षी है कि किसी भी भाषा का विकास सरकारी कार्यालयों में नहीं जनता के मंच पर होता है और फिर हिंदी के विकास में तो इसके शैशव काल से ही अहिन्दी भाषी क्षेत्रों का योगदान स्तुत्य रहा है और आज भी है. जिस प्रकार हिंदी का वैश्विक परिदृश्य पर महत्व बढ़ता जा रहा है. हिंदी बाजार में अंग्रेजी को पीट रही है, कल यह सरकारी दफ्तरों में भी उसे पीटने लगेगी. बालकवि वैरागी के अनुसार-'सरकारी दफ्तरों में अंग्रेजी को बसाये रखने वाले नौकरशाह अत्यंत कायर और धूर्त भारतीय है. न उनके पिता अंग्रेज है, न उनकी मां अंग्रेज. जिस दिन उनका स्वार्थ हिंदी में सधने लग जाएगा, वे एक झटके में अग्रेजी को अगूँठा दिखा देगें.'

हिन्दी

हरिचरण वारिज, भोपाल

हिन्दी
ब्रज बघेली बुन्देली की
त्रिवेणी बन
ज्यों वृषभ पर शिव
शिव के ललाट पर
चन्दा जैसी चमक रही है
आज देश में हिन्दी
राष्ट्र की बिन्दी
बनकर गमक रही है।
हिन्दी
जिसकी माता संस्कृत
जिसे गार्गी ने
निज स्तन पान कराया
और स्वयं की बेटी जैसा
अखिल विश्व में
निःस्वार्थ सम्मान दिलाया।
उसी संस्कृत से उपजी
अनगिन भाषायें
भारत भर में भरी पड़ी है
जबकि विश्व की हिब्रू रोमन
और अनेक अन्य भाषायें
अपने ही घर मरी पड़ी है।
शस्य श्यामला इस धरती पर
जो विचर रही है
सब हिन्दी की ही बहनें है
इनमें वर्णित
लोक भाव के क्या कहनें है।
धन्य अमीर खुसरों
जिसने कर एकत्र सहेलीं
कह डालीं अनगिन अन्जानें
मुकरी और पहेलीं।
बाल्मीकी ने वाणी देकर
कातर मन से बांधा
कालीदास और वाणभट्ट ने
समय समय पर साधा
कवि ईसुरी भूल न जईयो
जब जब फागें गईयों
हिन्दी भाषा के विकास में
इनके आभारी रइयो
भेंस बंदी है ओरछा
पड़ा होशंगाबाद
लगवईया है सागरिया
पपिया रेवा पार
सोचो मिलकर यार
बुन्देली कहां कहां तक फैली
मुंगलो की मुगलाई।

राष्ट्रभाषा के निर्माण में अमीर खुसरो का योगदान

दर्शन सिंह रावत, राजस्थान

राष्ट्रभाषा हिन्दी के विश्व व्यापी प्रचार-प्रसार के लिए जिन व्यक्तियों-संस्थाओं को धन्यवाद दिया जाना चाहिए, उसमें अमीर-खुसरों सबसे प्रमुख है. वे इस देश के उन चेतनावादी, समन्वयवादी, पुरुषों में से एक थे, जिन्होंने इस देश को महत्ती सेवा में अपना जीवन समर्पित कर दिया.

अमीर खुसरों फारसी के प्रसिद्ध कवि थे, लेकिन उनकी लोकप्रियता का कारण बनी है, हिन्दवी में लिखी गयी रचनाएं. हिन्दी में काव्य सृजन करने वालों में खुसरों का नाम प्रथमगण्य है.

वे उदार सूफी-साधना के प्रवर्तक, हिन्दु मुस्लिम एकता के अद्भूत, सांस्कृतिक समन्वय के सेतुबन्ध, भारतीय संगीत के उन्नायक ही नहीं, जननी जन्मभूमि के प्रति अगाध-प्रेम रखने वाले पक्के राष्ट्रप्रेमी थे.

उन्होंने हिन्दी को फारसी से कम नही मानकर, साहित्य सृजन किया, वे मानते थे कि हिन्दी भाषा का व्याकरण नियमबद्ध है. उनकी रचनाओं द्वारा राष्ट्रभाषा का स्वरुप निर्धारणा हुआ है. उनकी कविता में राष्ट्रप्रेम कूट-कूट कर भरा है.

अमीर खुसरों ने गुलाम वंश, खिलजी वंश, तुगलक वंश के ग्यारह सुल्तानों के शासनकाल में राजदरबारी रहे. उन्होंने कभी भी राजनीति की द्वार पूजा नहीं की. वे जल में कमल की तरह दरबार में रहे, और जनता की भाषा में जनता के लिए लिखते रहे. उनके द्वारा लिखी गई, रचनाओं की संख्या सौ मानी जाती है, परन्तु उनकी प्रसिद्धि खड़ी बोली की रचनाओं से हुई थी.

उन्होंने अपनी 'आशिका' नाम की रचना में हिन्दी की प्रशंसा करते हुए, इस आशय की बात लिखी है कि यदि आप अच्छी तरह से विचार करेगे तो हिन्दी को फारसी से किसी प्रकार हीन न पायेगे.

हिन्दुस्तान में हिंदी शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग अमीर खुसरो की खालि कबारी में प्राप्त होता है. खालिकबारी कोश ग्रन्थ है, और हिंदी एवं अरबी-फारसी शब्दों का सुगम पर्याय प्रस्तुत किये गये है.

यह पुस्तक भारत में आये ईरानी, अरबी, तुर्की लोगों के लिए लिखी गयी थी. इसमें खेतीबाड़ी, व्यवसाय, आम जानकारी सरल भाषा में काव्य के रुप में दी गयी थी.

इससे हिन्दी जानने वाले फारसी और अरबी सीखते थे, और फारसी-अरबी जानने वाले हिन्दी सीखते थे. यह पुस्तक की हजारों प्रतिया बनाकर ऊंटो एवं बैलगाड़ियों द्वारा गांव एवं कस्बों में वितरित की गई, जिससे जनभाषा ज्यादा से ज्यादा प्रचलन में आ गयी.

अमीर खुसरों ने यह भी लिखा है कि हिन्दुस्तान की भाषा हिंदी पर मुझे बड़ा गर्व है, मैं हिन्दुस्तान के बारे में सब कुछ जानता हॅू, इसलिए वास्तव में अगर तुम कुछ पूछना चाहते हो, तो हिंदी में ही पूछो, उसमें मैं तुम्हें अनुपम बाते बता सकुंगा. खुसरों फारसी, अरबी, उर्दू और खड़ी बोली के अलावा भारत की अनेक प्रादेशिक भाषाओं के भी मर्मज्ञ थे, उनका मानना था कि हिंदी अनेक भाषाअें की शक्ति समाहरण से समृद्ध बनी है.

खुसरों की हिंदी रचनाएं खड़ी बोली में है, जो उस समय मध्य-देश में बद्ध प्रचलित भाषा थी. खड़ी बोली, सामान्य बोलचाल के लिए बहुत बड़े क्षेत्र में प्रचलित थी.

खुसरों बड़े विनोदी, मिलनसार, सहृदय कवि थे. उन्होंने अनेक रसीले गीत एवं दोहे भी लिखे. उन्होने पहेलिया एवं मुकरियों में ठेढ खड़ी बोली का अदभूत प्रयोग किया था.

खुसरो द्वारा रचित गीतों और दोहों में ब्रजभाषा मिश्रित खड़ी बोली का प्रयोग किया गयाा है. उनके द्वारा रचित लोकगीत आज भी उत्तर भारत की स्त्रिया गाकर अपना मनोरथ प्रकट करती है.

खुसरों ने छंदो, रागनियों के बंधनों और परम्पराओं के अनुकरण से अलग हट कर मौलिक उद्भावनाओं का प्रर्दशन किया. उन्होने काव्य के क्षेत्र में जनसामान्य के विषय को अपनाया, वही भाषा के क्षेत्र में खड़ी बोली को अंगीकृत किया. खुसरों की यही खड़ी बोली आज राष्ट्रभाषा के रुप में प्रचलन में है.

उनकी पहेलियों, मुकरियों में सामान्य जनता की ही भाषा और भावना को स्थान मिला है. उन्होने तत्कालीन भाषाओं की सूची भी बनाई जो कि भाषा वैज्ञानिक की दृष्टि से महत्वपूर्ण है. उनकी रचनाओं द्वारा राष्ट्रभाषा का स्वरुप निर्धारण हुआ है.

व्यंग्य

अटल जी ने पंडित जी से कहा
"मुझे अपने यहां कथा
करवानी है।" पंडित जी ने
कहा- "रहने दीजिए मुझे
अपने पेट पर लात नहीं
मरवानी है। आप कथा सुनेंगें
शंख बजाया जायेगा।
आपका कुछ न बिगड़ेगा
शंख साम्प्रदायिक हो जायेगा।"

संजय श्रीवास्तव, विन्ध्याचल, उ०प्र०

++++++++++++++++++++

राष्ट्रीय मुद्दा

लोकशाही का अभिशाप-

आरक्षण, अल्पसंख्यंक और आतंक

- आरक्षण हेतु पिछड़ा तबका किसे कहा जाए? उसका आधार क्या रहे? वर्तमान में सरकार ने जिन पिछड़ी जमातो की तादाद बताई है उनका तथ्यात्मक आधार या सबूत क्या माना जाए?
- क्या आरक्षण का आधार सिर्फ सरकार निर्धारित जातियां ही रहे जिन्हें कि बिना सही आधार के केवल वोट बैंक हेतु पिछड़ी घोषित किया हुआ है
- कई ऐसे पिछड़े है जो अरबों की संपत्ति बना चुके है. उनकी संताने भी अच्छी व ऊंची जगहों का लाभ ले सम्पन्न बन चुकी है. फिर भी पिछड़े बन कर दूसरों का लाभ छीन रहे है. ये अपनी ही जाति के वास्तविक पिछड़ों का कौर छीन रहे है.

आरक्षण के विवादस्पद मुद्दे पर देश की सुप्रीम कोर्ट ने अपना फैसला दिया है. हालांकि सुप्रीम कोर्ट का फैसला वर्तमान संविधान स्थिति को मद्देनजर रखते हुए दिया है. फिर भी दो पूरक तथ्य जरुर उजागर हुए है.

पहला-आरक्षण हेतु पिछड़ा तबका किसे कहा जाए? उसका आधार क्या रहे? वर्तमान में सरकार ने जिन पिछड़ी जमातो की तादाद बताई है उनका तथ्यात्मक आधार या सबूत क्या माना जाए? क्या आरक्षण का आधार सिर्फ सरकार निर्धारित जातियां ही रहे जिन्हें कि बिना सही आधार के केवल वोट बैंक हेतु पिछड़ी घोषित किया हुआ है अथवा उन्हें आर्थिक आधार से मान्य किया जाए? संविधान में सभी नागरिकों को बिना जाति या लिंग भेद के समानता का अधिकार दिया है तब उसमें यह भेद पिछले ६० वर्षो से अन्यों को अन्याय कर रहा है. वे बड़ी जातियां अपनी वोट व संगठन शक्ति के अधार पर पिछड़ी बन अन्यो का शोषण कर रही है. उनके लिए वास्तविकता की गुहार कहां लगाई जाए? पिछले ६० वर्षो में तीन पीढ़िया बीत चुकी है तो उन आर्थिक दृष्टी से असंगठित जातियों का कब तक शोषण होता रहेगा?

दूसरा मुद्दा रहा क्रीमी लेयर का तो जिन्हें पिछड़ा मान कर कायमी तौर की सुविधाएं दी गई है. उनमें के कई मंत्री बन कर अरबों की संपत्ति बना चुके है. उनकी संताने भी अच्छी व ऊंची जगहों का लाभ ले सम्पन्न बन चुकी है. बाकी ऐसे लाखों जिन्हें सांसद, विधायक, आई.ए.एस. अथवा वैसे ही उच्च पद हासिल हो चुका है. वे कब तक पिछड़े बन कर दूसरों का लाभ छीनते रहेगें? चंद्र क्रीमी लेयर वाले आजादी पश्चात वर्षो से मंत्री या अन्य लाभ के पदों पर बैठे हुए है और फिर भी स्वयं को पिछड़ा बता कर अपनी ही जाति के वास्तविक पिछड़ों का कौर छीन रहे है. उनमें जगजीवन राम, रामविलास पासवान, सुश्री मायावती, लालू प्रसाद यादव, मुलायम सिंह यादव जैसे अनगिनत है तो उनका भी इलाज होना चाहिए. यह बात सुप्रीम कोर्ट ने कही है. देखना है आगे उसका पालन कैसे क्या होता है?

✍ **समाज प्रवाह, मुंबई**

अभी हाल ही में राजस्थान की गूर्जर कौम जो खाती पीती, सुखी एवं अच्छी स्थिति में है पर उन्हें भी आरक्षण में अतिपिछड़ों के साथ स्थान चाहिए. यह उनकी मांग पिछले कुछ वर्षो से चली आ रही है. जिसके लिए पूर्व में कांग्रेसियों ने और पिछले चुनावों में भाजपा ने उन्हें आरक्षण देने का लॉलीपाप दे दी थी और सत्ता पाने के बाद कुछ भी नहीं किया. इस बार के चुनावों में भाजपा ने उनसे वादा किया फिर सत्ता पाकर तीन वर्ष तक उस पर अमल नहीं किया. दूसरी बात आरक्षण के मामले में दूसरी भी कुछ बड़ी समृद्ध जातियां जिनमें जाट, यादव, माली, सुनार आदि का समावेश है वे पहले ही उस आरक्षण के लाभ कवच में शामिल हो चुकी है. राजस्थान की मीणा कौम जिसने पिछड़ों में शामिल होकर आरक्षण द्वारा गजब का इकतरफा लाभ उठाया है. अभी वही सरकारी बड़ी नौकरियो में मोनोपोली की हद तक छाई हुई है उसे राजनैतिक भाषा में क्रीमी लेयर कहा जाता है तो उसे देख कर या भीतरी स्वार्थ या ईर्ष्या को लेकर अब गूजरों ने भी अपनी मांग को लेकर आन्दोलन शुरु कर दिया वह सब एकाएक नहीं हुआ है. उसके पीछे राजनेताओं की बेईमानी भी एक कारण

है. इसलिए उन्होनें अपनी पुरानी लम्बित मांग को लेकर गजब का हिंसक आन्दोलन शुरु कर दिया. कई मरे, करोड़ों की सरकारी संपत्ति का नुकसान हुआ, सैकड़ों घायल हुए, करीब एक सप्ताह तक उनका हिंसक ताण्डव चला और दूसरी तरफ वचन देकर मुकरने वाली बीजेपी की मुख्यमंत्री बेशरमी से किए हुए अपने वायदे को टालती रही.

> आखिर सुप्रीम कोर्ट में ही दो प्रश्न उठे- पहले साबित करो आरक्षण विधान समत है? उसे तो कोर्ट ने मान्य किया है पर कुछ शर्तो के साथ अब उसमें देखना है कि मूलभूत समान नागरिक अधिकारो का हनन तो नहीं हो रहा है. साथ ही उसमें अनावश्यक हस्तक्षेप तो नहीं हो रहा है. तीसरा आरक्षण का आधार क्या? कौन पिछड़ा कितना पिछड़ा और उनकी सही संख्या कितनी?

अंततोगत्वा वातावरण इस हद तक तंग हुआ कि सारी व्यवस्था अवागमन व्यवसाय आदि की चरमरा गई. आखिर समझौता हुआ. यह समझौता पहले भी समझदारी के साथ हो सकता था. ऊपर से मीणाओं को एक ही आपत्ति की गूजरों को आरक्षण देने से हमारा हिस्सा कम हो जायेगा. वे अकेले मलाई खाना चाहते हैत्र

देश के संविधान ने सभी नागरिकों को बिना किसी जातपात या लिंग भेदभाव के समान नागरिक अधिकार का मूलभत अधिकार दिया है. बावजूद इसके उसी विधान की ऐसी तैसी करते करते हुए आरक्षण की समय सीमा तथा नया नया प्रतिशत जोड़ कर उसमें आये दिन वृध्दि होती रही है. जिसके पीछे वही बड़ी जातियां जिनकी की वोट शक्ति है और जिनके चुने हुए लोग लोकसभा राज्यसभा और विधानसभाओं और मंत्री पदों पर निर्णायक स्थिति में होते है. वे अपनी जाति का भला करने और अपनी वोट बैंक को पुख्ता करने के लिए ऐसी करतूते करते कराते रहे है. भले ही उससे बाकी समाज मरे कटे या जनता में आपसी बिखराव आए उनकी बला से उन्हें तो आरक्षण द्वारा अपनी सत्ता बनानी होती है. आरक्षण की सीमा तो बढ़ी पर उसका लाभ सभी पिछड़ों को नहीं केवल और केवल उन्हीं चेद जातियों के प्रभावी समूहो को मिलता गया और वही 'क्रीमी लहर' के रुप में सम्पन्न और शक्तिशाली बने हुए है. उन्होंने इतना धन जमा कर लिया है जिससे कि वे अकेले पार्टी बने हुए है. उन्होंने इतना धन जमा कर लिया है जिससे कि वे अकेले पार्टी बनाकर पूरे प्रदेश व संसद की अनेक सीटे लड़ लिया करते है, भले ही सीटे नहीं मिले पर वोट मान्यता तो मिल ही जाती है. उनके सामने छोटी जातियां विरोध के लिए संगठित नहीं होती और वे विखरी रहती है इस तरह बढ़ते बढ़ते इन्हीं जातियों का आरक्षण सौ प्रतिशत होने में देर नहीं लगेगी. जिसका फायदा ये शातिर दिमाग राजनेता उठाया करते है. पिछले कई वर्षो से तमिलनाडु के संकुचित और शरारती नेताओ ने आरक्षण सीमा ६४ प्रतिशत तक बढ़ा दी है और भी उसमें २७ प्रतिशत जोड़ना चाहते है. दूसरे वी.पी.सिंह, अर्जुनसिंह जैसे सत्ता पीड़ित विघटनवादी शातिर लोग जिसमें एक ने मण्डल के नाम से तो दूसरे ने अपनी निजी कामना से आरक्षण की सीमा २७ प्रतिशत और बढाने की विवादी घोषणा कर दी. उसके विरोध में आन्दोलन हुए. कई निर्दोष मरे पर इनकी राक्षसी मनोवृत्ति में कोई अंतर नहीं आया. आखिर सुप्रीम कोर्ट में ही दो प्रश्न उठे- पहले साबित करो आरक्षण विधान समत है? उसे तो कोर्ट ने मान्य किया है पर कुछ शर्तो के साथ अब उसमें देखना है कि मूलभूत समान नागरिक अधिकारो का हनन तो नहीं हो रहा है. साथ ही उसमें अनावश्यक हस्तक्षेप तो नहीं हो रहा है. तीसरा आरक्षण का आधार क्या? कौन पिछड़ा कितना पिछड़ा और उनकी सही संख्या कितनी? बिना उसे जाने ही आप अपनी वोट बैंक हेतु मनमानी द्वारा आरक्षण प्रतिशत को बढ़ाते जा रहे हो? जिससे समाज व जातियों में भाईचारा समाप्त होकर आपसी विद्वेष फैल रहा है. पर उन नालायक और शातिर नेताओ के पास इसका जवाब नहीं. आगे तो कोर्ट जो भी निर्णय करे. पर इनके इन क्रून प्रयासों से अनेक जातियों में आपसी द्वेष दुश्मनी की भावना बढ़ी और बढ़ती जा रही है. जिसका ताजा उदाहरण मीणा गूजरों का है जो किसी न किसी रुप में तनाव की स्थिति बनाए हुए है. यहां आपसी विद्वेष के इस विषय को समझने के लिए पिछला इतिहास भी देखा जाए. जिसने वोटों के खातिर समाज को लड़ाया है.

संविधान सभा में डॉ० भीमराव अंबेडकर ने आरक्षण को केवल १० वर्ष के लिए तय किया था जिस विधान की इतनी दुहाई दी जाती है. वह करीब सौ बार बदला जा चुका है. नेहरु और बाद की उनकी जमात ने उसे कायमी स्वरुप प्रदान कर दिया. नतीजा हर दस वर्ष के बाद दूसरे दस वर्ष की समय मर्यादा बनती बढ़ती गई. पांचवी बात कांग्रेस और गांधीजी की मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति को लेकर देश का विभाजन हुआ. नेहरु ने उसे यथावत कायम रखा. उन्होंने ही सर्वप्रथम देश में मुस्लिम लगी को फिर से जीवित

कर राजनीति में स्थापित किया. नतीजा देश के मुसलमानों का भी नुकसान हुआ. वे इस देश की बहुसंख्य जनता से समरस नहीं हो सके. छठी बात विदेश नीति की सनक या विसंगतता को लेकर कश्मीर का विवाद युनो में ले जाकर और तिब्बत चीन को देकर. हमारे देश की उत्तरी सीमओं को असुरक्षित किया. नतीजा चीन और पाकिस्तान ने हमारी बहुत बड़ी जमीन हथिया ली है. यह सब पूर्व भूमिका के रुप में लिखा है. जब कि सरदार पटेले ने अपनी मृत्यु के एक माह पूर्व १५ नवम्बर १९५० को चेताया था कि वह चीन पर कत्तई विश्वास नहीं करे. उसकी सावधान रहे परन्तु नेहरु की मूर्खता को लेकर १९६२ में चीन से हम शर्मनाक हार देखनी पड़ी. वर्तमान में जार्ज फर्नाडिज जैसे एक नेता ने हिम्मत पूर्वक चीन को भारत का नम्वर एक का दुश्मन बताया था जिस पर हमारे पंचमांगी साम्यवादिओं और नेहरु जमात ने जमाकर विरोध किया. नतीजा बात तो भले ही दब गई पर इतिहास सच्चाई बन कर खड़ा है. चीन को धोखे बाजी व अतिक्रमण के प्रयास खुले आम जारी है और हम १९६२ की हार के बाद डरे हुए उसे सहन करने को मजबूर है. कारण देश समर्थ है. मगर हमारा नेतृत्व नपुंसक है जिसमें देश नेतृत्व और स्वाभिमान की क्षमता नही है.

कांग्रेसियों का दावा रहा कि आजादी हमने बिना हिन्सा या कुरबानी के हासिल की है. वो सही कहते है कारण कि उस आजादी के लिए कुरबानी तो क्रांतिकारियों की थी उन्होंने गोलियां खाई फांसी चढ़े और लम्बी अवधि की जेल यातनाए भोगी. जबकि कांग्रेसी तो केवल जिन्दाबाद के नारे लगाते रहे. उनमें कुछ २/४ महीनो की जेल भी गये होगें. उनके बहुत ही बड़े नेताओ ने ४/६ बार की सुविधापूर्ण जेले भोगी. जिनमें गांधीजी जवाहरलाल का नाम प्रमुख तौर से लिया जायेगा. ऐतिहासिक सच्चाई तो यह है कि कांग्रेस ने आजादी की लड़ाई कभी लड़ी ही नहीं थी. १९२१ में असहयोग आंदोलन चोरी चौरा कांड के दूसरे दिन ही बंद कर दिया. उसके २२ वर्ष बाद १९४२ में भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रस्ताव पारित करते ही उसी रात सभी कांग्रेसी नेता जेलों में डाल दिये गये थे. इस तरह कांग्रेसी आजादी आन्दोलन प्रारंभ होते ही खत्म हो गया. तथ्यात्मक इतिहास देखकर कोई बताये कि कांग्रेस ने आजादी के लिए कब-कब आन्दोलन किया. जिन्होंने वास्तविक कुर्बानी दी उन्हें धकिया दिया गया और आजादी का सारा श्रेय अपने नाम जमा करा लिया. दो महीने की जेल काटने वाले सच्चे झूठे सभी स्वातंत्र्य सैनिक बन पिछले ३०/३५ वर्षो से पेन्शनें खूंट रहे है.

देश की जनता बिना अपना व देश का हित सोचे जाति, धर्म के नाम बेईमानों को वोट करती रही है. जिस देश में विगत ६० वर्षो से पौढ़ प्रजातंत्र है उस देश की जनता जाति धर्म के आधार पर गुण्डों बदमाशों माफिया और भ्रष्ट बेईमानों को 'थम्बिंग मेजोरिटी' से चुनती रही है. भले ही चुना हुआ व्यक्ति जनसेवा का या अपने क्षेत्र की सेवा या विकास का काम करे या नहीं परन्तु इलाके की जाति आधारित जनता उसी पर मेहरबान होकर वोट देती रही है. जिनके नाम आर्थिक घोटाले, अपराधी हत्याओं के मामले चल रहे है या सिद्ध भी हो चुके है बावजूद उसके वे चुने जाकर मंत्री बने रहते है.

सरकारी धन से निजी ऐयाशी करना या बेरहमी से अपने या परिवार के लिए खर्च ही नहीं बल्कि उड़ाने की हद तक प्रयास करते रहना गैर जरुरी विदेश यात्राएं, गैर जरुरी विदेशी खरीद, जिससे कि उन्हें तगड़ा कमीशन मिलता रहता है. ऐसे तमाम प्रकरणों पर जनता का निष्क्रिय बने रहना. इतना ही नहीं कई बेईमान नेता और पार्टियां अपने चुनावी स्वार्थो को लेकर शराब, बर्तन, कपड़े, कम्बल या नकद वितरित कर सरकारी दिवाला निकालते रहते है. या गुण्डागर्दी माफिया गिरी को लेकर फर्जी वोट बूथकेपचरिंग द्वारा ऐसे प्रतिनिधीयों को ही चुनौती है तो कई नेता और पार्टियां सरकारी धन को पितृ संपति मान कोई दो रुपया किलो चावल तो कोई ५ रुपये में साड़ी धोती या पिछले चुनावों में तामिलनाडु की डी.एम.के. के के. करुणानिधी ने वोटरों को मुफ्त में कलर टीवी देने का वायदा किया तो वर्तमान केन्द्र सरकार ने किसानों का ६० हजार करोड़ का कर्जा माफ कर दिया. जिसका प्रत्यक्ष या परोक्ष खर्च राज्य की तिजोरी पर ही होगा. अब कोई पूछे कि यह धन आयेगा कहां से और इसका बोझ कौन वहन करेगा? दूसरी बात इस देश की कथित पुख्ता लोकशाही के ६० वर्ष बीत जाने पर भी इस तरह के रिश्वत प्रलोभनों द्वारा जनता स्वयं रिश्वत लेकर अपनी और उनकी बेईमानी भ्रष्टाचार को मान्यता देती रही है. वहां चुनाव जीतने के पश्चात कौन सा दल या नेता ईमानदार रहेगा? उसी सत्ता प्रलोभन का आधार है. मुस्लिम वोट बैंक और जाति आधारित आरक्षण. जिसके कारण उनकी जाति जमाति को लाभ व उन्हें सत्ता मिल जाती है. मगर बाकी देश की जनता में आपसी द्वेष विवाद या तनाव दंगो की स्थिति बनी रहती है. इनके पिताजी का कुछ नहीं जाता ये तो मर मराकर खप जाएंगे परन्तु उसका विद्वेषी परिणाम देश की जनता लम्बी अवधि तक भुगतती रहेगी. देश विभाजन का द्वेष अभी भी जख्मों को कुचरते जा रहा है. जन प्रतिनिधियों ने हर सार्वजनिक

काम या सरकारी खरीदी बिकरी में अपनी हिस्सेदारी रखनी शुरु कर दी है. काम चाहे ठेका निर्माण या सांसदनिधिा अथवा तो जनहित के प्रश्न संसद में उठाने के हो अब तो चुने हुए सांसद कबूतर बाजी करते हुए देश के कानून के साथ तो धोखाधड़ी करते हुए पकड़े जा रहे है. साथ ही उन लोगों को भी ठग कर उल्लू बनाते है जिन्हें कि कबूतरबाजी का माध्यम बनाया जाता है.

बात बेबात किसी नेता के उकसाने पर धर्म जाति मंदिर मस्जिद पर्व त्यौहारों में लेकर आरक्षण पाने जैसे स्वार्थी मामले में लोग उत्पात हुडदंग पर उतर आते है. जिस देश पर चीन ने आक्रमण कर हजारो किलोमीटर जमीन हड़प ली है. उसके प्रति देश की जनता का उदासीन बने रहना? यहां तक कि नेहरु सरकार से लेकर आज तक की तमाम सरकारों की गलत नीतियों को लेकर देश की सुरक्षा खतरे में है. कश्मीर एवं पूर्वी भारत के प्रदेशों में पूर्णतया अलगाव. देश विघटन की हद तक पनप चुका है. बाते ऊंचे आदर्शो को धर्मनिरपेक्षता की होगी पर व्यवहार में संकुचित जातिवाद एवं परिवारवाद के नाम पर लोकतंत्र चलाने की चलती रहेगी. मरे हुए नेताओं के वंशवासियों को अपने ही सिर पर लादना और उनकी समाधियों को, देश पर बोझ बनाए रखना. तब लगता है कि इस देश की जनता को जो अनुशासन या फर्ज सीखना चाहिए था वह सीखा ही नही है. केवल डींगे मारकर अपने देश को दुनिया का विशालतम जनतंत्र बताना. क्या खुद के साथ देश और दुनिया के साथ धोखा नहीं? फिर वहीं पहुंचते है जहां से चले थे. सावरकर की वह दीर्घ दृष्टी की सलाह आज पत्थर की लकीर बन चुकी है. आरक्षण का जिन्द तो बोतल से बाहर निकल चुका है. आजादी के ६० वर्ष पश्चात भी देश की अशिक्षित जनता जाति व धर्म के नाम हुल्लड़ उत्पात व दंगो से देश की संपति का नुकसान कर रही है. बदले में उत्पात दंगा और गुण्डई करने वालों को बम फोड़ने वाले बम बनाते हुए मरने वाले को जहां मुआवजा दिया जाता हो. वहां देश की शांति और कानून व्यवस्था का भविष्य किस ज्योतिष से पूछा जाए?

‘क्रान्ति–यज्ञ’ का विमोचन

युवा लेखक एवं भारतीय डाक सेवा के अधिकारी श्री कृष्ण कुमार यादव के कुशल सम्पादन में जारी पुस्तक ‘क्रान्ति-यज्ञ’: १८५७-१९४७ की गाथा’ का विमोचन ‘क्रान्ति दिवस’ ९ अगस्त २००८ को कानपुर में आयोजित एक कार्यक्रम में श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री, एवं श्री प्रकाश जायसवाल, गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार के कर कमलों द्वारा हुआ. इस अवसर पर पुस्तक का विमोचन करते हुए श्री सिंधिया ने कहा कि जाति-धर्म के भेदभाव भूल सभी लोग विशेषकर नौजवान आगे आयें और प्रगति व विकास के लिए कार्य करें, यही क्रांति-यज्ञ में हमारी आहुति होगी. स्वतंत्रता सेंग्राम का महासमर जिन सिद्धातों को लेकर लड़ा गया था, आज वे लुप्त से हो गये है, ऐसे में जरुरत है कि विभिन्न क्षेत्रों में युवा ऐसे समाज व राष्ट्र की स्थापना के लिए प्रतिबद्ध हों जिसका सपना हमारे शहोदों, क्रान्तिकारियों और राष्ट्र को आजादी दिलाने वाले महापुरुषों ने देखा था. श्री सिधिंया ने जोर देकर कहा कि राजनैतिक स्वतंत्रता के साथ-साथ सामाजिक और आर्थिक स्वतंत्रता भी हमारा ध्येय होना चाहिए.

श्री प्रकाश जायसवाल ने क्रान्ति-यज्ञ के सम्पादक श्री कृष्ण कुमार यादव को बधाई देते हुए कहा कि यह एक पुस्तक मात्र नहीं है बल्कि अपने आप में एक शोधग्रन्थ है क्योंकि इसमें वर्णित ऐतिहासिक तथ्यों को पढ़कर यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि इन्हें संग्रहित करने में सम्पादक को पूर्ण रुप से एक शोध कार्य करना पड़ा होगा. यह पुस्तक जनमानस को बहुपयोगी एवं दुर्लभ तथ्यों से अवगत कराने में सफल होगी।

सम्पादक श्री कृष्ण कुमार यादव ने माना कि आजादी के दीवानों का लक्ष्य सिर्फ अंग्रेजों की पराधीनता से मुक्ति पाना नहीं था, बल्कि वे आजादी को समग्र रूप में देखने के कायल थे. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इस बात की आवश्यकता है कि राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन के तमाम छुए-अनछुए पहलुओं को व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखा जाए और औपनिवेशिका पूर्वाग्रहों को खत्म किया जाए. श्री यादव ने इतिहास को पाठ्यपुस्तकों से निकालकर लोकाचार से जोड़ने पर जोर दिया. कार्यक्रम के दौरान श्री सिधिया और श्री जायसवाल ने २८ स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों और १६० उत्तराधिकारियों का अभिनन्दन व सम्मान करते हुए युवा पीढ़ी को इनसे प्रेरणा लेने को कहा. इस अवसर पर मंत्रीद्वय को डॉ० बद्रीनारायण तिवारी द्वारा स्मृति चिन्ह भेंट किया गया. कार्यक्रम में अजय कपूर-विधायक, श्री संजीव दरियाबादी-विधायक, श्री महेश दीक्षित-स्वतंत्रता सेनानी व उ. संगठन के अध्यक्ष डॉ० रमेश निगम, मुकुल नारायण तिवारी, अभिनव तिवारी, भूधार नारायण मिश्र, श्री निजामुद्दीन, श्री इकबाल अहमद सहित गणमान्यजन उपस्थित थे.

अध्यात्म

आओ खुशियाँ खोजें आनन्द मनाएँ

■जितना हम आनंद पाने के लिए भाग-दौड़ करते हैं छटपटाते हैं आनंद उतना ही हमसे दूर भागता है। फिर कैसे प्राप्त करें आनंद? जीवन को कैसे खुशियों से भरें?

सीताराम गुप्ता, दिल्ली

मनुष्य का मूल स्वभाव है खुशी अथवा आनंद। हम सब हर पल हर घड़ी आनन्द में ही तो जीना चाहते हैं जीना भी चाहिए। इसीलिए तो हर पल आनंद की खोज में लगे रहते हैं। आनन्द प्राप्ति वेफ लिए न जाने क्या-क्या करते रहते हैं। अच्छा खाते हैं, अच्छा पहनते हैं, घर को भी ख़ूब सजाकर रखते हैं लेकिन बात बनती नहीं। किसी को पढ़ने में आनन्द आता है तो किसी को लिखने में। कोई चापलूसी करने में आनंद प्राप्त करता है तो किसी को चापलूसी करवाने में ही आनंद की प्राप्ति होती है। लेकिन जितना हम आनंद पाने वेफ लिए भाग-दौड़ करते हैं छटपटाते हैं आनंद उतना ही हमसे दूर भागता है। फिर कैसे प्राप्त करें आनंद? जीवन को कैसे खुशियों से भरें?

आनंद का सीधा संबंध है सहजता और सरलता से। हम जितने सहज और सरल होते हैं उतने ही अधिक आनंद में होते हैं। लेकिन क्या आज हमारा जीवन सहज और सरल रह गया है? शायद नहीं। जीवन के हर क्षेत्र में भागमभाग। एक दूसरे से आगे बढ़ने की होड़। जन्म से लेकर मृत्यु तक प्रतियोगिता, विश्लेषण और दूसरों से तुलना। तुलना भी कैसी-कैसी! मात्रा यहीं तक नहीं कि उसकी कमीज मेरी कमीज से ज्यादा सफेद कैसे बल्कि उसका कप़ड़ा मेरे कपड़े से ज्यादा सफेद क्यों? ऐसे में क्या आनंद प्राप्त किया जा सकता है? शायद नहीं।

आज हम बाहर की दुनिया में खुशी तलाशते हैं। चीजों में सुख तलाशते हैं। ध्न-दौलत, पद-प्रतिष्ठा में आनंद खोजते हैं। आपकी खुशी, आपका आनन्द आपकी मनचाही वस्तु या घटना पर अधारित है। मनचाही वस्तु पा लेते हैं या मनचाही घटना घटित हो जाती है तो आप खुश वरना आपके दुखों की सीमा नहीं रहती। तो फिर सच्ची खुशी या आनन्द कैसे प्राप्त हो? सच्ची खुशी या आनन्द पाना है तो उसे चीजों और घटनाओं से मत जोड़ो। खुशी को बाहर तलाश करने की बजाय उसे अदंर खोजो। आनंद का वास्तविक स्रोत तो आपके भीतर है। आपका मन तथा आपके मन के भाव ज्यादा महत्वपूर्ण हैं। यदि मन आनंद से भरा है तो बाहरी संसार में चीजों की कमी भी आपके आनंद में कमी नहीं कर सकती। सकारात्मक विचारों से ओत-प्रोत मन ही सच्चा आनंद प्रदान करने में सक्षम है।

खुशियाँ तो हमारे चारों और बिखरी पड़ी हैं। आनंद के क्षण हमारी बाट जोह रहे हैं कि आओ और मुझमें समा जाओ। लेकिन नहीं। डॉक्टर ने कहा है इसलिए पार्क में दौड़ने या टहलने चले जाते हैं। किसी तरह तीन चक्कर पूरे हो जाएँ तो छुट्टी मिले। हमेशा तनाव में रहते हैं। क्या कभी पार्क के सौंदर्य को पूरी तरह निहारा है? पेड़-पौधे, फूल-पत्तियाँ सब आपसे मिलने को बेचैन हैं। आपसे मिलना, बात करना चाहते हैं रुकिए जरा उनसे मिलिए सचमुच आनंद आएगा। वे आपकी पीड़ा आपके तनाव को सोख लेंगे। आपको प्रफुल्लित कर देंगे, अपने जैसा बना देंगे। रोज पाँच-सात मिनट का समय इन फूलों से, इन पेड़-पौधें से मिलने के लिए निकालिए। आपको अपने घर में बनावटी फूलों के या आजकल के बिना सुगंध के फूलों के गुलदस्ते सजाने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। आप प्रकृति की अपेक्षा कृत्रिमता में कब तक आनंद की खोज करते रहेंगे? हिल स्टेशन पर जाकर सूर्योदय तथा सूर्यास्त देखने की बड़ी उत्सुकता होती है। अच्छी बात है लेकिन क्या आपके शहर में सूरज नहीं निकलता और छिपता? छत पर जाकर या बालकनी में से भी सूर्योदय व सूर्यास्त वेफ दृष्यों का आनंद लिया जा सकता है और बिल्कुल नए अंदाज में। सूरज, चाँद-सितारे ये सब हमारे साथ-साथ ही तो चलते हैं हमारे जीवन में आनंद की वर्षा करने के लिए। लेकिन इस वर्षा का लुत्फ हम नहीं उठाते। क्यों? आप बच्चों के साथ दुकान पर जाते हैं और बच्चे से पूछते हैं कि कौन-सी चॉकलेट लेगा। बच्चा कहता है कि लेमन पीउगा या लॉलीपाप लूँगा। लेकिन नहीं, ये नहीं लेना। आप वही दिलवाते हैं जो आपको अच्छा लगता है। जिससे आपके अहम् की तुष्टि होती है या खुशी मिलती है। लेकिन क्या आपको खुशी या आनंद की प्राप्ति होती है? नहीं। वास्तव में सच्चा आनंद दूसरों को आनंदित करने में है।

आप पाँच-छः साल के बच्चे को गाड़ी चलाना सिखा रहे हैं। वाह जनाब क्या कहने! बच्चा गाड़ी चलाना सीखना नहीं चाहता। आप अपनी बेजा इच्छा उस पर थोप रहे हैं। वह साइकिल चलाना चाहता है। वह एक छोटी-सी अपनी कार चाहता है जिसे वो अपनी हथेली पर रख उसे अपनी टांगों पर चला सके। आप उसको एट हंड्रेड चलाना सिखा रहे हैं। उसके चेहरे पर जो बेबसी है निराशा है क्या वह

आपको आनंद दे रही है? नहीं, बिल्कुल नहीं। आपको सच्चा आनंद तभी मिल पाएगा जब बच्चे को उसके खिलौनों के साथ खेलने दोगे उसे मिट्टी में लोटता तथा बारिष में भीगता देखोगे।

आप गर्मियों में प्याउ लगवाते हैं अच्छी बात है। शर्बत पिलवाते हैं। सड़क पर टेंट लगवाकर सब्जी-पूरी बाँटते हैं पर क्या कभी किसी भूखे को सब्जी-रोटी ख़रीदकर दी है। किसी मजदूर, किसी कामगार वाले को जो जेठ की भरी दुपहरी में आपके घर के दरवाजे की घंटी बजाता है एक गिलास पानी के लिए पूछा है? जो प्यासा होने पर भी आपसे एक गिलास पानी माँगते हुए झिझकता है उसे पानी पिलाकर देखिए तो सही कितना आनंद आएगा। कोई भिक्षुक आपके सामने हाथ फैलाता है उसे अपने घर मे नहीं तो घर के बाहर बरामदे में ही सही अपने हाथो से भोजन करा के देखिए, कितनी तृप्ति मिलेगी आपको! क्या ये सच्चा आनंद नहीं?

आनंद बहुत अधिक धन-दौलत, शोहरत और बड़ी-बड़ी उपलब्धियों में नहीं अपितु रोजमर्रा की छोटी-छोटी चीजों और घटनाओं में ज्यादा है। आप किसी साहब से पूछिए कि उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिलने पर कैसा लगा और एक छात्रा से जिसे किसी प्रतियोगिता में इनाम के तौर पर एक पेन मिला है पूछिए कि उसे कैसा लगा तो संभव है छात्रा को ज्यादा आनंद की प्राप्ति हुई हो। लोग प्रायः खुश होने के लिए भविष्य का इंतजार करते रहते हैं। जीवन में एकमात्र बड़ी ख़ुशी या आनंद के इंतजार मे जो एकदम अनिश्चित और असंभव है असंख्य छोटी-छोटी ख़ुशियों को नजरअंदाज कर देना कहाँ की बुद्धिमानी है? आओ जीवन के हर पल में हर क्षण में ख़ुशी खोजें और आनन्द का उत्सव मनाएँ।

१६वाँ अ.भा.हिन्दी साहित्य समारोह १–२ नवम्बर को राष्ट्रस्तरीय सम्मानों के लिए प्रस्ताव आमंत्रित

गाजियाबाद. यहाँ प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले साहित्यिक-सांस्कृतिक आयोजनों ने गाजियाबाद को सांस्कृतिक राजधानी की पहचान प्रदान की है. इन समारोहों में देश-विदेश के जाने-माने साहित्यकार, पत्रकार, शिक्षाविद, व समाजसेवी बड़ी संख्या में उपस्थित होते है.

इस श्रृंखला का आगामी आयोजन १-२ नवम्बर को १६वें राष्ट्रीय समारोह के रुप में आयोजित किया जायेगा, जिसमें साहित्य समाज और पर्यावरण चर्चा का मुख्य विषय रहेगा. विद्वानों से इस विषय पर आलेख आमंत्रित है. इसी के साथ अ.भा. पत्र-पत्रिका वपुस्तक प्रर्दशनी, सांस्कृतिक संध्या, काव्य निशा तथा राष्ट्रस्तरीय नामित सम्मान प्रदान किये जायेंगें.

अ.भा.राष्ट्रभाषा विकास संगठन तथा यू.एस.एम. पत्रिका के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित होने वाले इस समारोह के मुख्य संयोजक व संपादक श्री उमाशंकर मिश्र के अनुसार यह वर्ष 'यू.एस.एम. पत्रिका का रजत जयंती वर्ष है जिसका प्रारंभ गत १ जून को आयोजित कार्यक्रम से किया गया था. रजन जयंती सबंधी ये आयोजन पूरे वर्ष देश के विभिन्न भागों में किए जायेंगें तथा १ जून २००६ को यू.एस.एम. पत्रिकाा का एक और वृहद विशेषांक प्रकाशित किया जायेगा.

श्री मिश्र ने बताया कि समारोह में प्रतिवर्ष अनेक नामित सम्मान प्रदान किये जाते है जो समारोह में उपस्थित अति विशिष्ट महानुभावों के हाथों दिलवाये जाते है. सम्मानार्थ चयन पात्रता के अनुसार किया जाता है. इनसे संबधित विवरण के लिए मुख्य संयोजक, १६वां अ.भा.हिन्दी साहित्य समारोह, ६९५, न्यू कोट गांव, जी.टी.रोड, गाजियाबाद, पता लिखा लिफाफा भेजकर प्राप्त किया जा सकता है. सम्मानार्थ प्रस्ताव भेजने की अंतिम तिथि १५ सितम्बर है. इसके बाद प्राप्त प्रस्तावों पर विचारा नहीं किया जायेगा.

कृष्ण कुमार यादव को सृजनदीप सम्मान

सृजनदीप कला मंच, पिथौरागढ़ ने युवा साहित्यकार एवं भारतीय डाक सेवा के अधिकारी श्री कृष्ण कुमार यादव को उनके गरिमामयी व्यक्तित्व एवं प्रशासनिक उत्तरदायित्वों के साथ-साथ निःस्वार्थ साहित्य सृजन के लिए सृजनदीप सम्मान से अलंकृत किया है. कानपुर में पदस्थ श्री यादव की रचनायें विभिन्न विधाओं में देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में अक्सर प्रकाशित होती रहती है. अल्पायु में ही पॉच पुस्तकों की रचना करने वाले श्री यादव पर तमाम पत्र-पत्रिकाओं ने जहॉ विशेषांक जारी किए है वहीं वेब साइडस को भी सुशोभित कर रही है.

कहानी

कोख

शमीम राव सारथी, अररिया, बिहार

कोशीधार के अधदलदली मिट्टी के ऊपर रेंगता केकड़ा अपने दर्जनो बच्चों के साथ घेघव जंगल में समा गया. पानी के बुलबुले, डेरवा, पोठी, लट्ठा के साथ कई अन्य छोटी मछलियॉ इधर से उधर कर रहे थे, साथ ही कभी-कभी बड़ी मछलियॉ आकर पानी में अपनी उपस्थिति दर्ज कराता. आसमान में बाज भी नीचे नजर गड़ाये था. बगुला इस कदर अपना सारा ध्यान गड़ाए रखा था कि जैसे महापंडित चिंतन कर रहा हो. तभी एक सॉप एक छोर से दूसरे छोर जा रहा था कि आसमान से बाज आकर..... पानी में आवाज हुआ छप्...छपाक्....फू.....अ...ऊ. ...र......

इधर माथे पर गमछी (तौलिया) लपेटे मछली बच्चे खाय लेलकेय कोकड़ा के, जे लगएल कम तार, ऊ हे, चाटे.... .हो, हो.... कैसन अइले जमाना हो रामा......आ कैसन अइलय अलला जुग........

दुलारी के विवाह हुए लगभग बारह वर्ष हो चुके थे. पर, उनकी सुनी गोद ने सभी परिवार वालों का दुश्मन बना डाला था. भावनाऍ दिन ब दिन घृणा के रुप में अनवरत वही जा रही थी. परिवार का शायद ही कोई सदस्य हो, जिसने दुलारी को बांझीन, कर्मजली, बेटखैाकी और न जाने क्या-क्या ताने व व तुकबंदी न की हो, घर के तो घर के लोग धीरे-धीरे पास-पड़ोस के लोग भी उसे तृरस्कृत करते. सुबह-सुबह अगर दुलारी अपने दरवाजे पर झाड़ू भी देती तो उसे मुहल्ले वालों से न जाने क्या-क्या सुनना पड़ता. लोगो का मानना था कि अगर सुबह-सुबह उसका मुखदर्शन हो जाय तो दिन का सारा जतरा ही खराब हो जाएगा. और यदि वह बिस्तर पर विलम्ब से जगती तो परिवार वाले उसे खड़ी-खोटी सुनाते. कहते है कि एक स्त्री का दुःख दर्द एक स्त्री ही जान सकती है, पर दुलारी की सास और ननद भी तो एक स्त्री ही थी पर, वे क्यों देती थी ताने और गाली? एक स्त्री को यदि पूरी दुनियां तिरस्कृत कर दे किंतु उसका पति अगर उसे पल भर स्नेह की दृष्टि डाल दे, उमंग के तरंग में पतंग लहरा दे, माथे पर हाथ फेर दे, ललाट को चूम लें तो वही पूरी दुनिया की तिरस्कार बनाम बहिष्कार होने के बावजूद...

एक तो भाई ईद के चॉद जैसा था किंतु उस पर भी कभी-कभार आता तो उसे काफी कुछ उल्टा-कुल्टा सुनना पड़ता. बिन हाड के मांस कैसे चढ़े. सो वह भी आना-जाना छोड़ दिया. दुलारी की मां और पिताजी तो इस दुनिया में रहे नहीं. वे तो उसके जन्म होते ही चल बसे. किसी तरह बड़ा भाई उसका पालन-पोषण किया. वह अपनी पढ़ाई भी पूरी नहीं कर पाई थी कि भाभी से खटपट होने की वजह से जल्दबाजी में विवाह करा दिया गया. पढ़ने में तेज, देखने में अप्सरा, बोली में कोयल को टक्कर दे दे, चलने में हिरणी भी शर्मा जाय.......

सगा आखिरकार सगा होता है, आज के जमाने के एतबार से कम से कम कुछ भी तो वह पढ़ाया लिखाया और जहॉ तक हो सका थोड़ा देख-सुन कर ही विवाह कराया. स्वयं आदर्श विवाह किया किंतु अपनी बहन के विवाह में अच्छा-खासा खर्च भी किया. इससे उसकी बीबी नाम-भौंहे जरुर सिकोड़ी पर वह न माना. अपनी बहन के यहॉ अक्सर जाता और खासकर रक्षाबंधन व भैया दूज में तो वह अपनी बहन के यहॉ जाना भूलता ही नहीं कितु...

समय बीतता गया और समस्या भी. विवाह के बाद तो ससुराल वाले उसके भाई को भगवान जैसा ही मानते पर पॉच, छः साल बाद तक दुलारी की गोद न भरने की शिकायत आम होने लगी. भाई को तरह-तरह के जहर से भी कड़वी बातें व उलाहने सुनने को मिलने लगे. उसकी सास तो मॅूह फेर कर यहॉ तक कह डाली कि ले जाइए अपनी बाझीन बहन को. बच्चा न कुच्चा, इसकी सुरत और सीरत लेकर हमलोग चाटेंगे क्या! हमारे वंश का नाश हो गया. मेरे बेटे को खा गई, हड्डी चूस ली ये कर्मजली. मैं अपने बेटे का दूसरा विवाह कराउॅगी. तब उसका भाई काफी रोया-गिरगिराया था. पर उससे उसका शून्य से आगे कोई लाभ नही हुआ. वह तो यहॉ तक कहा कि मां जी, धर्म तो एक ही विवाह का प्रावधान है. इस पर उसकी सास बोली-‘अरे, रे, रे आगे का लौण्डा एक तो बहन कोखजली है, ऊपर से भाई हमको धर्म का पाठ पढ़ाता है, तेरे जैसे लौण्डे को.....धर्म लेकर चाटॅूगी क्या? वह अपनी बहन का कई बड़े डाक्टर से इलाज भी कराया पर सारा विफल. डाक्टर का कहना था कि पति में ही दोष है, पर इस बात को मानने के लिए कोई तैयार नहीं... हकीम, बैद्य, ओझा, गुणी, ठिकवा न जाने कहॉ-कहॉ इलाज कराया गया पर...

और फिर उसके बाद उसका भाई भी ईश्वर के भरोसे छोड़ कर हमेशा के लिए आना-जाना छोड़ दिया...

दुलारी का पति कुमार ने न मानकर आखिरकार दूसरा विवाह कर ही लिया. दुलारी पर प्रताड़ना और बढ़ती ही गई. पर दुलारी का एक ही रट था कि माये के घर से डोली उठती है, और ससुराल से अर्थी.

दुलारी की सौतन दुलारी पर काफी दबाव डालती. उससे नौकर की तरह

काम लिया जाता था. वह किसी हिन्दी फिल्म, सीरियल की विलेन महिला की किरदार से कम अभिनय नहीं करती थी. एक दुलारी थी कि अपनी सासू मां के जिल्लत सहकर भी आज तक मूँह न लगाती. एक उसकी सौतन है कि मूँह लगान क्या! बात-बात पर झोटकी पकड़ कर उसे कई बार मार भी चुकी थी. वह अपने बेटे से इसकी शिकायत भी की पर बेटे के ऊपर भी तो...

समय बीतते-बीतते दुलारी तो दुलारी उसकी सौतन के भी पॉव भारी होने के आसार नहीं दिखने लगे और यूँ ही पॉच बरस बीत गए. इस तरह इससे भी सभी को हैरानी हुई. उसे कई स्त्री विशेषज्ञ डॉक्टरों से दिखाया गया. पति के रिर्पोट में तो थोड़ी बहुत आशा थी पर पत्नी के रिर्पोट में शून्य पाया गया. इससे घर में पुनः हाय-तौबा हुआ. इस बात को सुनते ही सभी स्तब्ध रह गए. अब करें तो क्या करें. दुलारी कुछ थोड़े ही है, जो वह उलाहने सह लेगी. हर कोई संतान की खुशी चाहता है. अब वह..... और वह दुलारी की तरह दूसरी पत्नी को कुछ कह भीा नहीं सकता. और ना ही उस पर धौस जमा सकता था, क्योंकि उसका भाई शहर का मशहूर दबंगो में से एक था. दुलारी कुछ थोड़ी ही थी कि अपनी सास, ननद, पास-पड़ोसी की बात सहे. पतिव्रता बनी रहे. वह तो कानून जानती है. ऐसे आजकल सारा का सारा पक्ष, कानून महिला के ही पक्ष में है. एक बार जहॉ डॉवरी एक्ट मुकदमा दायर हो जाए तो बाप का मजाल है कि कानून उसे चैन की सास लेने देगा. नारियल के पेड़ से चिड़िया कि चूं...चूं....चूं.... की आवाज. पूरब दिशा में निकलता सूरज दुलारी दरवाजे पर झाडू लगा ही रही थी कि उसका जी मचलने लगा. सूर्योदयपूर्ण होने पर उसका दिमाग चकराने लगा.

वह बर्तन माजते-माजते बैकेट पकड़े नल के पास बेहोश हो गयी. पड़ोस की चार-पॉच महिला के अनुसार दुलारी गर्भवती हो गई थी. दुलारी के पति, सास आदि के चेहरे पर प्रसन्नता के फूल खिल पड़े. उसकी सास सारी बलाएँ अपने ऊपर लेने लगी. कई लोग मिठाइया बॉटने के लिए नारे लगाने लगे. पर दुलारी फूट-फूट कर रोने लगी. अब दुलारी का मेहमान की तरह खातिरदारी शुरु हो गई. कहते है कि ‘सुखल जड़ में पानी बेकार.’

समय नजदीक आता गया. दुलारी के अब दिन पूरे होने वाले थे. समय होने पर उसे अस्पताल ले जाया गया. दर्द का इंजेक्शन दिया गया. वह प्रसव वेदना से तड़पने लगी. नर्स व उसकी सास उसे बातों से सहारा देने लगी. ‘जरा बर्दास्त करो, सब ठीक हो जाएगा, बस थोड़ी ही देर और...... भगवान पर भरोसा रखो. भाई को खबर भेजा गया.

कमजोर तन, रुठा मन, तड़पता जख्म. प्रसव वेदना सही नही जाने लगी. वह अपनी सासू मां को लपककर गले पकड़ ली. कभी वह बेड को जोर से पकड़ती तो कभी...... यह देख नर्स ने दूसरी इंजेकशन लगाते हुए उसकी सास को डिलीवरी होम से बाहर कर दी. अभी उसे निकले दस मिनट भी नहीं हुए थे कि तभी डिलीवरी के कमरे से चीखने की जोर की आवाज हुई. आ....अ, ऊ...ऊ. ऊँच...मां और फिर नर्स बाहर मुस्कुराते हुए निकली और बोली-‘मां जी, आपकी बहू को लक्ष्मी, सरस्वती संयुक्त रुप जैसी पोती हुई है. यह सुनते ही वह आनन-फानन में दौड़ती हुई अपनी पोती को देखने अन्दर चली गई. बिल्कुल चॉद का टुकड़ा, तीखे नयन नक्श, घुंघराले बाल, अपनी मां पर गई है....

तभी दुलारी को पुनः दर्द का अनुभव हुआ. ये क्या? ये दर्द तो बढ़ती जा रही है. नर्स समझ गई. मामला सीरियस है. वह फिर सास को बाहर कर दी. लगता है जुड़वा...

तब-तक उसके भाई भी अस्पताल आ पहुँचे. बच्चे के लिए कपड़ा, डोराडोर, हाथ का नजरा, कजरौटा, बेबी ऑयल, अपनी बहन व उसकी सॉस ननद के लिए भी कपड़ा वगैरह साथ लाए. वह फूले नहीं समा रहे थे. जुड़वा बच्चा का नाम सुनते ही पूरे अस्पताल में चर्चा का विषय बन गया था.

इतने ही देर में अन्दर से नर्स ने दरवाजा खोली और बोली-‘मुबारक हो, इस बार लड़का हुआ है, पर पेसेन्ट की हालत बहुत नाजुक है. वह बहुत कमजोर है. खून की कमी है. सभी ने कहा-‘उसे किसी तरह बचाइये, हे ईश्वर.... दुलारी की हालत बिगड़ती जा रही थी. सभी अन्दर आ गए. दुलारी अपने बच्चे को एकटक लगाए देखने लगी. धीरे-धीरे उसकी जुबान से आवाज गायब होने लगी. पैर व हाथ थर्र-थर्राने लगे. वह सभी को अचरज की नजरों से देखते-देखते चल बसी. सभी स्तब्ध रह गये. अस्पताल में सन्नाटा छा गया. दोनों नवजात शिशु कहां...कहां... कहां....

ग़ज़ल

चांद भी आग अब उगलता है।
आदमी सिर्फ हाथ मलता है।।
स्वप्न हर बार हम सजाते है।
पांव हर बार क्यों? फिसलता।।
लौट ना पायेगा वो घर शायद।
आदमी सोचकर निकलता है।।
खूबियां सर्द हवाओं की है।
पत्थरों का शहर पिघलता है।
कुछ तो इसका उपाय ‘ओम’ करो।
अब तो अरमान ये मचलता है।।

ओम रायजादा, कटनी, म.प्र.

मुद्दा

उधार का परिधान भारतीय संविधान

✍डॉ० एन०एस.शर्मा, मुम्बई

'हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जो संविधान लागू किया गया है तथा जिस गणतंत्र का निर्माण किया गया है, वह स्वयंएव एक व्यक्तिगत स्वतंत्रता है और सामाजिक न्याय हेतु भयंकर है. अतः यथाशीघ्र एक वास्तविक प्रतिनिधि सभा का गठन किया जाये जो कि नये संविधान का निर्माण कर सके और संविधान सामाजिक जनतन्त्र का उचित साधन बन सके.' **जय प्रकाश नारायण**

प्रो० निक्सन का कहना है कि भारतीय संविधान १९३५ के अधिनियम की लगभग नकल है. उस अधिनियम के प्रसंग में उसकी तुलना उस हस्तलिपि से की जा सकती है जिस पर कि लिखावट मिटाकर नई लिखावट के लिए जगह खाली की गई हो.

कुछ आलोचकों ने इसे पुरानी शराब को नयी बोतल में भरा जाना, भानुमती के पिटारा की संज्ञा, विभिन्न संविधानों का गड़बड़झाला तथा वकीलों के स्वर्ग का नाम दिया है.

डॉ.एम.पी.शर्मा का भी कथन है भारतीय संविधान के निर्माताओं ने कभी भी यह दावा नहीं किया कि वे बिल्कुल ही मौलिक संविधान ढूंढ निकालेंगे जबकि उन्होंने तात्कालीन परिस्थितियों के अनुकूल एक अच्छा संविधान बनाना चाहा था.

डॉ० जैनिग्स ने भी कहा है कि भारतीय संविधान में १९३५ के अधिनियम की अधिकांश धाराओं को ज्यों का त्यों रख दिया गया है.

विभिन्न संविधानों का गड़बड़झालाः अनेक विद्वानों ने इस संविधान में यह खोज निकाला है कि भारतीय संविधान सभा ने अनेक देशों के संविधानों को एकत्र करके उनमें से अच्छी-अच्छी बातों को काट-छांटकर, जी खोलकर और निःसंकोच अपने संविधान में मिला लिया. अमरीका के संविधान से राष्ट्रपति के अधिकार लिये गये जबकि ब्रिटिश संविधान से प्रधानमंत्री के अधिकार लिये गये है. सर्वोच्च न्यायालय का गठन अमेरिका के सर्वोच्च न्यायालय के अनुरुप किया गया है. संसद को इंग्लैड के संविधान में से छांटकर एक शक्तिशाली संस्था का रुप दिया गया है.

संविधान के अनुच्छेद ३५६ और १९३५ के अधिनियम की धारा नं०९२ बिल्कुल एक है. संविधान के अनुच्छेद ३५३ और ३६२ की पंक्तियां ज्यों की त्यों १९३५ के अधिनियम १९३५ के अधिनियम १०२ अनुच्छेद में देखी जा सकती है. संविधान के अनुच्छेद २५६ को भी १९३५ के अधिनियम १२६ अनुच्द्देद के उन्हीं शब्दों में रख दिया गया है. इनके अतिरिक्त दोनों में अनेक बातों की और भी समानताएं है.

ब्रिटेन के संविधान का प्रभावः इस संविधान में जिस संसदीय शासन की स्थापना की गई है उसे क्रियान्वित करने के लिए जो नियम बनाये गये है वे सभी ब्रिटिश संविधान की परम्पराओं के है.

अमेरिकी संविधान का प्रभावः इस संविधान पर अमरीकन संविधान का भी प्रभाव है. संविधान की प्रस्तावना, मूल अधिकार, सर्वोच्च न्यायालय द्वारा संविधान की व्यवस्था, उप राष्ट्रपति का पद एवं कार्य, न्यायाधीशों की स्वतन्त्रता, न्यायाधीशों का पदच्युत करने की विधि आदि के सम्बन्ध में दोनों संविधानों में काफी निकटता का सम्बध है.

आयरलैंड के संविधान का प्रभावः हमारे संविधान में राज्य की नीति के निर्देशक तत्व, राष्ट्रपति के चुनाव में निर्वाचक मण्डल सम्बन्धी प्रावधान और संसद के उच्च सदन में साहित्य कला, विज्ञान, समाज सेवा के क्षेत्रों में विशिष्ट व्यक्तियों को नाम जद करने की प्रणाली आयरलैंड के संविधान से ली गई है.

कनाडा के संविधान का प्रभावः दोनों ही देशो में संघीय शासन की स्थापना समान आदर्शो पर हुई है. कनाड़ा की तरह भारतीय संघ में भी अविशिष्ट शक्तियों को केन्द्रीय सरकार को सौपा गया है.

आस्ट्रेलिया के संविधान का प्रभावः संविधान की भाषा समवर्ती और सूची से सम्बन्धित केन्द्र व राज्यों के पारस्परिक झगड़ों को तय करने की प्रणाली आस्ट्रेलिया के संविधान से मिलती जुलती है.

दक्षिणी अफ्रीका के संविधान का प्रभावः इस संविधान की संशोधन प्रणाली भी दक्षिण अफ्रीका की संशोधन प्रणाली के ही समान है.

एक लम्बा लेखः भारतीय संविधान अन्य देशों की तुलना में बहुत विस्तृत है. इसमें ३९५ अनुच्छे है जबकि संयुक्त राज्य अमरीका के संविधान में केवल २१ ही अनुच्छेद है.

वकीलों का स्वर्गः आलोचकों का मत है कि भारतीय संविधान वकीलों द्वारा निर्मित होने के कारण उन्होंने इसमें अपने हितों का ही अधिक ध्यान रखा है. संविधान की भाषा गूढ़, अस्पष्ट तथा चातुर्यपूर्ण है क्योंकि उसमें वर्णित शब्दों के अनेक अर्थ निकलते है जो कि साधारण जनता की समझ से बाहर है. उन कानूनी पेचीदगियों के कारण ही वकीलों का महत्व आज बढ़ गया है और कदम कदम पर उनका परामर्श लेना आवश्यक हो गया है.

राष्ट्रपति के विस्तृत अधिकारः हमारे

संविधान में यह भी कमी बताई जाती है कि प्रजातन्त्रात्मक राज्य के मुख्यमंत्री को विशेष अधिकार सौंपना प्रजातन्त्र की हत्या करना है. शंकर राव के मतानुसार जर्मनी के संविधान के समान ही हमारे संविधान ने हमारे राष्ट्रपति को तनाशाह बनने का पूरा अवसर दिया है. श्री ए.सी.गुहा के अनुसार राष्ट्रपति के अधिकार में ऐसी बहुत सी शक्तियां निहित है जो जर्मनी के राष्ट्रपति की उन शक्तियों के समान है अर्थात जो कि हिटलर के समय उसे प्राप्त थी.

प्रधानमंत्री का आवश्यकता से अधिक महत्वः श्री टी.के.शाह का कथन है कि भारतीय संविधान प्रधानमंत्री को निरंकुश बना देता है. कुछ अन्य आलोचकों का भी यही मत है कि भारतीय संविधान में जनतन्त्र दिल्ली के चारों ओर केन्द्रित है.

राज्यसभा के अनुचित अधिकारः आलोचकों ने संविधान में राज्य सभा के अधिकारों से सम्बन्धित भाग की यह कहकर कटु आलोचना की है कि उच्च सदन को इतने अधिक अधिकार देना अप्रजातान्त्रिक है. राष्ट्रपति के चुनाव में उस पर महाभियोग चलाने एवं संविधान में संशोधन करने में राज्य सभा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है.

महात्मा गांधी के सिद्धातों की उपेक्षाः आलोचकों ने यह भी आरोप लगाया है कि गांधीजी समाजवादी एवम् साम्यवादी परम्पराओं के अनूकूल होना चाहिये था. भारतीय संविधान में नागरिको के मौलिक अधिकारों पर इतने प्रतिबन्ध है कि वे सब निरर्थक हो जाते है. इस प्रकार उक्त वर्णित बाते इस बात की स्पष्ट साक्षी है कि निःसंदेह हमारा संविधान उधार का थैला है.

हिन्दी को अपनी बोल चाल, व्यवहार व व्यवसाय की भाषा बनाए।

तारा सिंह को 'साहित्य महोपाध्याय

मुम्बई की वरिष्ठ छायावादी कवयित्री डॉ० तारा सिंह को उनकी अभूतपूर्व साहित्य सेवा एवं उच्च स्तरीय सृजन धर्मिता के लिए ११ मई २००८ को साहित्यिक, सांस्कृतिक कला संगम अकादमी, प्रतापगढ़ द्वारा २७वें भाषाई एकता सम्मेलन के अवसर पर आयोजित सम्मान समारोह में 'साहित्य महोपाध्याय' मानदोपाधि से अलंकृत किया गया. इसी मंच पर विन्ध्यवासिनी हिन्दी विकास संस्थान, नई दिल्ली द्वारा श्रीमती सिंह को हिन्दी साहित्य में उल्लेखानीय योगदान के लिए स्व० सरस्वती पाण्डेय स्मृति सम्मान एवं तारिका विचार मंच, इलाहाबाद द्वारा सम्मान-पत्र २००८ देकर विभूषित किया गया.

इंडियन सोसायटी फोर इण्डस्ट्री एण्ड इनटेलेक्चुवल डेवलपमेंट,नई दिल्ली द्वारा ८ मई २००८ कोकन्सटिच्यूशन क्लब, में आयोजित एक भव्य समारोह में डॉ० सिंह को उनकी व्यक्तिगत उपलब्ध्यिॉ एवं उत्कृष्ट साहित्यिक योगदान की सराहना करते हुए 'राष्ट्रीय सम्मान पुरस्कार' तथा 'गोल्ड मेडल' से नवाजा गया. श्री मानिक राव गवित, भूतपूर्व केन्द्रीय राज्य मंत्री, श्री योगेन्द्र सिंह, भूतपूर्व निदेशक, सी.बी.आई. एवं डॉ. भाई महावीर भूतपूर्व राज्यपाल, मध्य प्रदेश के हाथों श्रीमती सिंह को स्वर्ण जड़ित ट्रॉफी, गोल्ड मेडल तथा प्रशस्ती पत्र प्रदान किए गए.

१० मई २००८ को गांधी दर्शनहाल, दिल्ली में स्वतंत्रता सेनानी एवं प्रख्यात साहित्यकार स्व० अमर सिंह जोबन के जन्म शताब्दी वर्षगांठ पर आयोजित एक विशिष्ट समारोह में दिल्ली के मुख्यमंत्री, श्रीमती शीला दीक्षित की उपस्थिति में डॉ० श्रीमती तारा सिंह को उनकी अद्वितीय साहित्यिक साधना के लिए अहिन्दी भाषीा हिन्दी लेखक संघ, दिल्ली द्वारा 'अमर सिंह जोबन' तथा माता अमर कौर सम्मान २००८ से आभूषित किया गया.

मर्मज्ञ को वरिष्ठ प्रतिभा सम्मान

हम सब साथ-साथ मासिक पत्रिका द्वारा नई दिल्ली में आयोजित अखिल भारतीय प्रतिभा सम्मान-२००८ के अवसर पर पद्मश्री डॉ० श्याम सिंह 'शशि' के हाथों हिन्दी साहित्य में योगदान के लिए 'वरिष्ठ प्रतिभा सम्मान' से सम्मानित किया गया. सृजनदीप कला मंच, पिथौरागढ़ ने युवा साहित्यकार एवं भारतीय डाक सेवा के अधिकारी श्री कृष्ण कुमार यादव को उनके गरिमामयी व्यक्तित्व एवं प्रशासनिक उत्तरदायित्वों के साथ-साथ निःस्वार्थ साहित्य सृजन के लिए सृजनदीप सम्मान से अलंकृत किया है. कानपुर में पदस्थ श्री यादव की रचनायें विभिन्न विधाओं में देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में अक्सर प्रकाशित होती रहती है. अल्पायु में ही पॉच पुस्तकों की रचना करने वाले श्री यादव पर तमाम पत्र-पत्रिकाओं ने जहॉ विशेषांक जारी किए है वहीं वेब साइडस को भी सुशोभित कर रही है.

आतंकवादः जागरुकता ही बचाव है. जब हम जागरुक होगें तो दुनिया की कोई भी ताकत हमें नहीं हिला सकती. हमारे नेताओं को भी इस संदर्भ में स्पष्ट नीति अपनानी होगी. नेताओं को एक दूसरे पर लांछन लगाने के बजाए मिलकर एक साथ खड़ा होना पड़ेगा. **दाउजी, समाज सेवी**

व्यंग्य-बाण

चपरासी वाइस एसोसिएशन

श्रीकान्त व्यास, पटना, बिहार

हर विभाग में एसोसिएशन. जहॉ देखिये वहॉ एसोसिएशन. स्वर्ग हो या नकर, हर जगह एसोसिएशन. जितने अपने को कुछ असुरक्षित महसूस किया उसने एसोसिएशन बना लिया. जिसका शोषण हुआ उसने एसोसिएशन बना लिया. हिजड़ों का एसोसिएशन हो या आई.ए.एस.पदाधिकारियों का, आखिर है तो एसोसिएशन ही. कुछ ऐसे उल्लू के पट्ठे निकले जिसने आज तक कोई एसोसिएशन नहीं बनाया. ऐसे में मौंगा एसोसिएशन और चपरासी वाइस एसोसिएशन क्यों नहीं बन सका. यह प्रश्न समाज के बीच आज भी अनुत्तरित है. इन दो एसोसिएशनों का नहीं बनना मुझे बड़ा खटकता है. आखिर एसोसिएशन का अपना महत्व होता है. अगर महत्व नहीं रहता तो समाज में हजारो-हजार एसोसिएशन क्यों बनते? क्या इन मौगों और चपरासी की पत्नियों को अपना एसोसिएशन बनाने का हक नहीं. हक है और बनना चाहिए मगर इन तबकों के बीच लगता है चेतना खरहे की सींग की तरह गायब है. भले ही इनके बीच चेतना का पलायन हो गया हो मगर हम कभी पलायन नहीं होने दे सकते. सबसे दया के पात्र तो चपरासी की पत्नियॉ है. मैं कई ऐसे चपरासी की पत्नियों को जानता हूँ जो नहीं चाहते हुए भी अपने पतिदेव के साहब के यहॉ दाई का काम करती है. इसे अत्याचार नहीं कहेगें तो और क्या? मैं नहीं चाहता कि चपरासी की पत्नियां साहब के यहॉ मजबूरी में दाई का काम करें और इनके पतिदेव सब दिन अपने साहब से बेवजह प्रताड़ित होते रहें. जिन चपरासियों को ब्लड प्रेशर वाले साहब मिले उन्हें डांट और गालियॉ ही मिली.

एक दिन संध्या बेला में मेरे पड़ोस की चार चपरासी की पत्नियॉ आपस में अपने पतिदेव की प्रशंसा के पुल बॉधा रही थीं. गप्प में पूर्ण रुप से मशगूल थी चारों. मैने सोचा कि यही शुभ मुहूर्त है इन्हें उत्प्रेरित करने का. मैं इनके गप्प में विघ्न डालते हुए कहा-'अजी, आप लोग मिलकर एक एसोसिएशन क्यों नहीं बना लेती. क्या आप लोग चाहती हैं कि आपके पतिदेव सब दिन साहब से झिड़की सुनते रहें, गालियां खाते रहें.'

ग्रुप की एक होशियार महिला ने जवाब दिया-'नहीं जी, हम लोग ऐसा कभी नहीं चाहेंगें.'

'नहीं चाहतीं तो क्यों नहीं शीघ्र ही आप लोग मिल-बैठकर चपरासी वाइस एसोसिएशन गठन कर लेती. इस बैनर तले साहब लोग के अत्याचार के विरुद्ध में बिगुल फूंक दीजिये. एलान कर दीजिये कि आज से जो कोई साहब अपने आदेशपाल को बेवजह तंग नहीं करेंगें, अगर ऐसा हुआ तो उन्हें आदेशपाल की पत्नी बेलन और झाड़ू से स्वागत करेगी. नागफनी के पौधों से बंदरवाट सजाया जायेगा.' मैंने नेक सलाह दी.

मेरी सलाह चपरासी की पत्नियों को पंसद आयी. वर्ष की पहली तारीख को बकायदा इन लोगों ने 'चपरासी वाइस एसोसिएशन' का गठन कर लिया. एक सप्ताह बाद इन लोगों ने आगे की रणनीति के लिए मीटिंग बुलाई. मीटिंग में कई चौकाने वाले प्रस्ताव पारित हुए...

!!क!! जो कोई साहब अपने चपरासी की प्रतिभा से जलेंगे उन्हें अपने मुँह में आग का जलता हुआ लड्डू के आकार का गोला डालकर आधा घंटा तक रखना होगा.

!!ख!! अगर कोई अविवाहित अधिकारी भूल से भी कभी अपने चपरासी को गाली दे और साला कहें तो उन्हें जीजाजी का फर्ज निभाते हुए जातिबंधन मुक्त ओर दहेज रहित विवाह आदेशपाल की बहन से करना होगा.

!!ग!! हर चपरासी को वेतन के अलावा प्रतिमाह एक मोटा डंडा उपलब्ध कराया जाए. अगर साहब ज्यादा बदमाश हो तो उसे काबू करने के लिए गदा खरीद कर दिया जाए.

!!घ!! चपरासी की पत्नियों को सपरिवार हर माह कम से कम एक दिन साहब की एसी कार में सफर करने का सुअवसर मिलना चाहिए और हॉ, कार ड्राइव खुद साहब करें.

!!ङ!! घूसखोर, भ्रष्ट, व्यभिचारी और शराबी अधिकारी पर अंकुश लगाने के लिए एक-एक गदहा और एक-एक डिब्बा कालिख चूना प्रति चपरासी को फोकट में देना होगा.

एसोसिएशन में पारित प्रस्ताव की एक-एक फोटो कापी विभाग के संबंधित अधिकारियों को प्रेषित की गयी. प्रस्ताव प्राप्त होते ही संबंधित अधिकारियों में हड़कम्प मच गया. अधिकारियों ने इस हड़कम्प से उबरने का उपाय सोचा. बहुत माथा-पच्ची करने के बाद इन अधिकारियों में एक को एक तरकीब सूझी. प्रशासनिक सेवा के एक अनुभवी अधिकारी ने सला ही...' क्यों नहीं हम पर्व-त्योहार के बहाने इन उग्र नारियों को पटियानें का काम करें.'

एक चश्माधारी बी.डी.ओ. ने टोका-'आखिर इन नारियों को पटियानें के साधन का तो उल्लेख करें.'

'अरे! साधन क्या गिनाना है. हर चपरासी को प्रत्येक वर्ष में कुछ न कुछ गिफ्ट देकर खुश कर लिया जाए. ध्यान रहें गिफ्ट में श्रृंगारिक सामान की अधिकता हो. जब गिफ्ट उनकी पत्नियॉ घर में खोलेंगी तो बहुत खुश होगी कि साहब उनके पतिदेव को बहुत मानते हैं. बाद में शोषण बदस्तूर जारी रहेगा. ' अधिकारी ने नुस्खा बताया.

चपरासी की पत्नियों के इससे और ज्यादा खुश करने का क्या तरकीब हो सकता था. शुरुआती दौर में तो यह तकरीब कमाल कर गया मगर बाद में जाकर स्थिति जस की तस हो गयी. चपरासी की पत्नियों को यह माजरा समझते-समझते कई महीने लग गये. साहब लोगों का अचानक हृदय परिवर्तन नारियों के मन में शंका उत्पन्न करने लगी. दुनिया में हर चीज का समाधान संभव है मगर शंका का समाधान करना असंभव नहीं तो कठिन जरुर है. वह भी नारियों की शंका तो और खतरनाक होती है. चपरासी की पत्नियों ने फिर बिगुल फूंक दिया. इस समस्या के समाधान के लिए अधिकारियों ने आपातकालीन बैठक बुलाई. नारियों के चंडी रुप देखते हुए इन अधिकारियों ने अपने उच्चाधिकारियों को त्राहिमाम संदेश भेजा. इस गंभीर मसले पर बैठक दर बैठक होती रही. मगर समस्या जस की तस बनी रही.

इंतजार में बाहर खड़ा था

पत्नी (पति से)-आज आप बहुत देर से घर आए.

पति (पत्नी से)-और तुम इतनी रात तक जाग कर क्या कर रही हों.

पत्नी (पति से)-मैं पांच घंटे से आपके इंतजार में जाग रही थी.

पति(पत्नि से)- और मैं पांच घंटे से इसी इंतजार में बाहर खड़ा था कि तुम सो जाओं मैं अंदर आऊँ.

प० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के १२ जून ०८ को जन्म दिवस पर हार्दिक बधाई

सन्देश

पवित्रता की साहित्य धारा में डूब रहे है।
पण्डिय जीवन नित शुभाशुभ बता रहे है।।
तरना-बनना काम आप नित कर रहे है।
श्री शक्ति की साधना का ज्ञान बता रहे है।।
गोपी तुल्य प्रेम साहित्य बिंदों से कर रहे।
कुल मर्यादा की बात जीनव में निभा रहे है।।
श्याम सुन्दर सी कला जीवन उतार रहे है।
वतन जनहित में स्नेह भाव में लुटा रहे है।।
रसिकता विश्व स्नेह समाज चला रहे है।
कुदृष्टि जन जन की औरों से भगा रहे है।।
मान्यता है स्नेह समाज का विश्व बना रहे है।
रसना पर नित्य साहित्य सुधा बरसा रहे है।।
द्विव्य साधना तप आपका लोग पहचान रहे है।
वेदना जन मानस की दूर करने हेतु लड़ रहे है।।
दीनों पर दया समता सेवा भाव बता रहे है।
कौशिक नारायण बारह जून जन्म दिवस मना रहे है।।
राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य भाषा सेवा संस्थान चला रहे है।
विश्व स्तर पर हिन्दी की पहचान आप बना रहे है।।
राष्ट्रीय एकता भाषा एकता का महत्व बता रहे है।
कर्मयोगी बन दीनों की नित आप सेवा कर रहे है।।
धन्य जीवन पण्डित श्री गोकुलेश्वर जी जी रहे है।
जहां नहीं हिन्दी की भाषा वहॉ हिन्दी पढ़ा रहे है।।
नारायण कौशिक वन्दन कर त्रुटि क्षमा चाह रहे है।
विश्व स्नेह समाज हमारा साहित्य विदू जी रहे है।

वैद्य पं. नारायण शर्मा 'कौशिक'

प्रधान सम्पादक, वेदांग ज्योति मासिक, परशु प्रज्ञा पाक्षिक, मेड़ता सिटी नागौर

सफल व्यक्तित्व

हिन्दी की अलख जगाने वाली सात भाषाओं की ज्ञाता, महान विदुषी डॉ० राधा कृष्णमूर्ति

✍ गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

गत ४५ वर्षो से हिंदी प्रचार में तत्पर डॉ० (श्रीमती) राधा कृष्णमूर्ति की शिक्षा राष्ट्रभाषा प्रवीण, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, परास्नातक हिंदी एवं संस्कृत से १९६५ में हिन्दी विश्वविद्यालाय, वाराणसी से करने के बाद, १९७० में मैसूर विश्वविद्यालय से हिन्दी में पी.एच.डी तथा १९८३ में पुणे विश्वविद्यालय, पूणे से संस्कृत में पी.एच.डी. किया. तीस वर्षो तक एम.इ.एस.कॉलेज, बगलौर में हिन्दी व संस्कृत की प्राध्यापिका रही तथा छः वर्ष तक विभागाध्यक्ष के रुप में कार्य की, साथ ही साथ बेंगलौर विश्वविद्यालय के हिन्दी स्नातकोत्तर विभाग में अंशकालीक प्राध्यापिका के रुप में भी कार्य की. स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग में भी तीन साल तक अंसकालीक प्राध्यापिका के रुप में कार्य किया. आपकी अध्यापक यात्रा को यही विराम नहीं मिला बल्कि बेगलोर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में पी.एच.डी. शोध छात्रों का निदेशन किया तथा पॉच छात्रों को डाक्टरेट करायी.

आपने कर्नाटक में हिन्दी का व्यापक प्रचार-प्रसार, विशेष रुप से महिलाओं के लिए हिन्दी वर्ग चलाकर उनके बीच हिन्दी की ज्योति जगायी. राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से भाषणों और लेखों द्वारा कर्नाटक व कन्नड़ की सांस्कृतिक और साहित्यिक विभूतियों के प्रसार द्वारा राष्ट्रीय एकता स्थापित करने का अनवरत प्रयास कर रही है.

आपके शोध कार्यो में इतिहास, संस्कृति, विज्ञान, साहित्य, धर्म, वेदान्त आदि कई विषयों से संबंधित अनेक शोधा-निबंध हिन्दी, संस्कृत, कन्नड़ में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए.

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की आर्थिक सहायता से बृहत अनुसन्धान योजना के 'संस्कृत हिन्दी व कन्नड़ महाकाव्यों में सामाजिक संबंध' पर शोध कार्य किया. शोध कार्यो में हमेशा तत्पर रहने वाली डॉ० कृष्णमूर्ति ने अब तक चालीस से भी अधिक विचार गोष्ठियों में शोध निबन्धों का प्रस्तुतीकरण किया है.

१९८८ से कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति की पत्रिका 'हिन्दी प्रचार वाणी' की गौरव संपादिका, १९५९ से तीन साल तक ऐ.टी.ए मासिक पत्रिका के हिन्दी विभाग का संपादन, चार साल तक बेंगलूर नगर केन्द्रीय पुस्तकालाय में हिन्दी विशेषज्ञ के रुप में कार्य किया.

आपकी अब तक 'कर्नाटक वैभव'-हिन्दी पुस्तक, 'दक्षिणभारत की संत परंपरा' (केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय से पुरस्कृत), कर्नाटक के मंदिर, शिवतत्वरत्नाकर-एक सांस्कृतिक अध्ययन' संस्कृत के सत्रहवीं शती के बृहत् संस्कृत विश्वकोष ग्रन्थ के आधार पर अंग्रेजी में लिखित ग्रन्थ, तथा हिन्दी के करीब २५० से अधिक ललित लेख व शोध निबन्ध प्रकाशित हो चुके है.

१९८४ में कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति से प्रचारक सम्मान, १९९३ में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान से सौहार्द सम्मान, २००० में हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से साहित्य वाचस्पति उपाधि से, २००२ में चित्रापुर मट द्वारा धर्म प्रचार के लिए, २००३ में मिथिक सोसाइटी, बेंगलौर द्वारा विद्वत सम्मान, २००५ में वेदाध्यन केन्द्र द्वारा 'संस्कृत श्री' उपाधि से विभूषित हो चुकी डॉ० राधा कृष्णमूर्ति हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में भी खूब प्रकाशित हुई है. १९५२ से १९६५ तक हिन्दी प्रचार सभा की पत्रिका में 'साहित्य संसद स्तंभ में, १९५८ से १९६२ तक इण्डियन टेलिफोन इण्डस्ट्री पत्रिका में, भारती, महादेश, मानसी, भारतीय शिक्षण, बसमार्ग, हिन्दी संघ समाचार, केरली भारती पत्रिका, भाषा पीयुष, कल्याण, सप्तगिरि, नवभारत टाईम्स, हिन्दुस्तान पत्रिका, राष्टधर्म में रचनाएं प्रकाशित होती रहती है. आकाशवाणी बेंगलौर से भी समय-समय पर रचनाएं प्रसारित. आपके लेख हिन्दी प्रचार वाणी में धारावाहिक रुप में भी प्रकाशित हुए है- उनमें मुख्य रुप से कन्नड़ साहित्य परिषद का इतिहास, कर्नाटक की कवयित्रियॉ, कर्नाटक के वीरशैव संत, कर्नाटक के हरिदास संत, कर्नाटक की स्वातंत्रय सेनानी महिलाए, कर्नाटक की कलाऍ, कर्नाटक के मन्दिर मुख्य है. आपके करीब ४० विविध विषयों पर लेख भी प्रकाशित हो चुके है.

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, वेदाध्यन केन्द्र, बेगलौर, मिथिक सोसाइटी, बेगलौर, इस्टीट्यूट ऑफ हिस्टारिकल

रिसर्च, कलकत्ता, कर्नाटक इतिहास अकाडमी, बेगलौर, भारतीय विद्या भवन, मुंबई, आल इण्डिया ओरियन्टल कान्फरन्स्, पुणे, द्वैत वेदान्त अनुसन्धान प्रतिष्ठान, बेगलौर, भारतीय भाषा संगम, बेगलौर, अकादमी आफ म्यूसिक, बेगलौर, कन्नड़ साहित्य परिषद, बेगलौर, सारदा प्राच्य संशोधन संस्था, चेन्नई की आजीवन सदस्य डॉ० कृष्णमूर्ति नवम्बर १९९४ से कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति की अध्यक्षा के रुप में हिन्दी सेवा में रत है.

हिन्दी के माध्यम से दक्षिणभारत के विविध वैभवों को प्रस्तुत करने का संकल्प लेने वाली डॉ० कृष्णमूर्ति कन्नड़ व दक्षिणभारत की भाषाओं व हिन्दी के अन्तसम्बंधो को जोड़ने को तत्पर है. आपका कन्नड़, मराठी, तमिल, संस्कृत, अंग्रेजी, प्राकृत, पाली भाषाओं पर समान अधिकार है. आपकी धर्म, दर्शन व संगीत में विशेष रुचि है.

आप भारत भारती हिन्दी की सेवा ही जीवन का मुख्य ध्येय मानती है. आपको , आपके हिन्दी प्रेम को, आपकी विद्वता को पत्रिका परिवार नमन् करता है.

पुलिस में रिर्पोट की

पति (पत्नी से)- आज किसी ने मेरी जेब काट ली.

पत्नी(पति से)-तो पुलिस में रिर्पोट की?

पति(पत्नी से)-नहीं, मैंने गलती कर दी.

पत्नी (पति से)-वह क्यों?

पति (पत्नी से)-जेब कटने के तुरंत बाद मैंने उसे दर्जी से सिलवा लिया.

संता (बंता से)-तुम्हारे दांत कैसे टूट गए?

२. बंता (संता से)-हंसने के कारण.

संता (बंता से)-क्या मतलब?

बंता (संता से)-हां यार, कल मैं एक पहलवान को देखकर हंस पड़ा था.

स्नेह बाल मंच

प्रिय भैया/बहिनों

आप लोगों को कहॉनी पढ़ना तो अच्छा लगता ही होगा. इस बार अच्छी-अच्छी कविताएं आप लोगों के लिए दे रही हूॅ. आशा है पंसद आएगी. आप लोगों को पसंद आये तो अपनी बहन को जरुर लिखिएगा.

आपकी बहन

संस्कृति 'गोकुल'

छोटे से कम्प्यूटर जी

छोटे से कम्प्यूटर जी, प्यारे से कम्प्यूटर जी।
माता-पिता गुरु से बढ़के, लगते हो तुम ट्यूटर जी।।
साथी तीन तुम्हारे पक्के, की बोर्ड, सीपीयू, माउस।
जहॉ तुम्हें रखा जाता है, वह होता अनुपम हाउस।।
एक बटन के दबते ही, हाथ को तुम बढ़ाते हो।
उसमें रखी सीडी. को तुम बटन दबाते खाते हो।।
उसमें क्या-क्या भरा हुआ है, साफ-साफ बतलाते हो।
यही हाल है फलापी का, फ्लाप नहीं करते हो।
हल्का सा पुश करते ही, झट से उसे निगलते हो।।
जिसकी जितनी कापी चाहे, लगा निकालें प्रिंटर जी...
धूल, गंदगी से है नफरत, प्यार है तुम्हें सफाई से।
दुनिया भर की तरह-तरह की तुममे छिपी सफाई से।।
जब जितना करसर कहता है, प्रस्तुत करो भलाई से।
छेड़छाड़ जो करे, सामना करे तुम्हारी बुराई से।।
लाख परेशां होकर भी वो, पाए न खोया मैटर जी...
तरह-तरह के खेल छिपाए, रहते अपने अंतर में।
सालों सीखें तब कही पाए, तुम्हें चलाने का मंतर ये।
यूएसए के चार्ल्स बैबेज बने तुम्हारे आविष्कारक।
हर असंभव के तुम ही हो, बने अकेले संभव कारक।
छोटा-बड़ा, नया-पुराना, स्कैन करो हर मैटर जी..

राजेन्द्र कृष्ण श्रीवास्तव,लखनऊ,उ.प्र.

मर्मज्ञ की 'मिट्टी की पलके' सम्मानित

बगलौर, कर्नाटक के वरिष्ठ साहित्यकार श्री ज्ञानचन्द्र मर्मज्ञ को 8 मई 08 को नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में पूर्व गृह राज्य मंत्री श्री मानिक राव गावित के हाथों इनकी काव्य कृति 'मिट्टी की पलके' हेतु सम्मानित किया गया. इस अवसर पर म.प्र. के पूर्व राज्यपाल भाई महावीर प्रसाद एवं सीबीआई के पूर्व निदेशक श्री जोगिन्दर सिंह के अलावा भारी संख्या में अनेक गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे.

कहानी

परदोष

✍आचार्य भगवान देव 'चैतन्य'
सुन्दर नगर, हिमाचल प्रदेश

सतीश ने अपने मकान का काम लगा रखा था तथा दिन के समय वह लगभग वहीं पर रहता था क्योंकि जब तक सिर पर खड़े न रहें तब तक मजदूर भी ठीक ढंग से काम नहीं करते है. एक दिन वह मजदूरों से काम करवा रहा था तो एक व्यक्ति उससे मिलने के लिए आया. उसने आते ही कहा, 'मेरा नाम सुखु है तथा मुझे इन्द्रपाल जी ने आपके पास भेजा है...'

'अच्छा-अच्छा, इन्द्रपाल जी ठीक-ठाक तो है? सतीश ने पूछा.

'अजी, पूछो मत, बहुत मजे में है. अपना मकान बनवा लिया है तथा सभी बच्चों को सरकारी नौकरी में एडजस्ट करवा लिया है.'

'बच्चों का शादी-ब्याह भी हो गया है क्या...?

'हां सभी का हो गया है....आपको नहीं मालुम क्या?

'नहीं हालांकि वह मेरा बचपन का मित्र है. मगर अब तो हमें मिले भी बहुत वर्ष हो गए है...अच्छा तुम बताओ कैसे आना हुआ?

'सुना है आपके मकान की सैट्रिंग खुलने वाली है.'

'हां लगभग तीन-चार दिनों में ही खुल जाएगी.'

'तो कृपा करके मुझे सैट्रिंग दे देना क्योंकि मेरे मकान का भी सलैब पड़ना है.' सुखू ने कहा.

'मगर यह तो ठेकेदार की है उससे पूछना पड़ेगा.'

'मुझे अधिक सैट्रिंग की जरुरत नहीं है. वैसे तो मैंने सरकार से एक चीड़ सैक्सन करवा ली थी और बाद में गार्ड को पैसे देकर तीन चीड़े और भी काट ली थी मगर किसी से अधिक पैसे मिले तो कुछ मैंने बेच भी दी. मेरे पास गर्वमेंट का स्टोर है, कुछ शहतीरियां और बले वहां से भी खिसका कर रख लिए है.... बस थोड़ी सी ही कमी है...'

'कुछ भी हो ठेकेदार को तो पूछना ही पड़ेगा....'

'अरे साहब पूछने की क्या जरुरत है कह देना कि टूट-फूट गई....'

'नहीं नहीं ऐसा मैं नहीं कह सकता.

'अरे कहने में क्या जाता है. वह आपका कहना मान लेगा और मेरा काम भी निकल जायेगा....'

'ऐसा करके मैं अपना विश्वास नहीं खोना चाहता हूँ.' सतीश ने दो टुक उत्तर दिया.

'अरे साहब, ये ठेकेदार भी कहां दूध के धुले होते है. यह जो आप वाला ठेकेदार है न.... क्या नाम है उसका?

'सोमनाथ'

'हां, सोमनाथ....बहुत हेराफेरी करता है साहब....'

'करता होगा. मुझे नहीं मालूम मगर व्यक्ति को अच्छे-बुरे कर्म का फल स्वयं ही भोगना होता है. जो जैसा करेगा, वह वैसा ही भरेगा भी. तुम्हें इस प्रकार किसी पर दोष लगाने का कोई अधिकार नहीं.'

'अरे साहब चोर को ही तो चोर कह रहा हूँ....सच्चाई कहने में क्या हर्ज है.......'

'दूसरे के बारे में तो व्यक्ति तरह-तरह की बातें करता है मगर स्वयं अपनी ओर नहीं देखता है....'

'क्या मतलब?'

'देखो सुखु तुम ठेकेदार की बुराई तो कर रहे हो मगर तुमने स्वयं सरकार से एक चीड़ सैक्सन करवाकर तीन और काट ली....फिर अच्छा भाव मिलने पर कुछ लकड़ी बेच भी दी. सरकारी स्टोर से लकड़ियां चुरा ली... क्या यह सब चोरी नहीं है?'

'अच्छा साहब चलता हूँ लगता है यहां पर मेरा काम नहीं बनेगा.' सुखु ने उठते हुए कहा और चुपचाप वहा से चला गया.

मुक्तक

तिमिर तपस्या करता है किरनों को पाने को,
चन्द्र ज्योत्सना निहित निशा में बस घुल जााने को
कितना है असहाय बना उसका अस्तित्व यहॉ,
आते है उजयारे पल तम दूर भगाने को।
कह गया जो कह गया बस कह गया,
ज़िन्दगी की गंदिशें भी सह गया
पीने वाले में लिखाया नाम है,
ओंठ से प्याला लगा ही रह गया।
मैं गरल के घूँट पीता ही रहा,
मिलन का श्रृंगार शूलों से किया
नहीं सुधियों की मुझे आहट मिली,
मौन के चिर गान ही गाया किया।
बूँद भाप बन फिर पानी बन जाती है
सृष्टि नेष्टि से एक नया घर पाती है
जीव नियति के आवागमन भंवर में फंस
उछल कूद करता माया भरमाती है।
प्रश्न अनबूझी पहेली हो गए,
आदमी अब तो अनोखे हो गए,
मारकर के कुहनियों से भीड़ को
वो थे पीछे आज आगे हो गए.

पी.एस.भारती, बरेली, उ.प्र.

एड्स सुरक्षा ही बचाव है:
जी.पी.एफ सोसायटी द्वारा जनहित में जारी

पर्वत पूछता है

पर्वत पूछता है
क्यो आते हो
अकेले निरीह
भटक रहे यात्री की तरह
नित्य यहां
धूप लू अंधड़ से
सूखी अनवरा भूमि से बटोर
बन्द कसी मुट्ठी में
धूल रेत राख लिए...
आते हो
और इन्हें
यहां छींट जाते हो
आंखो की कोटर से
टपक रहे बूंद-बूंद
सपनों के साथ
चुप कसे अधरों के
अस्फुट स्वर
बिंधा बिंधा मौन
हूंकती धमनियों की क्षतकराह.
.फिर भी बतियाते हो
पर्वत की पर्तो से
जैसे कह रहे हो
मेरी इस भेंट को
आस मित्र अर्पण को
ओ पर्वत स्वीकारो
अपना ही पर्त बना
इसको भी ग्रहण करो, रुप दो
लाया हूँ कण-कण में
घुटते मनुष्यों की चीत्कारें
करे धरे का हिसाब
और उषस गान भी
बच्चों के चिड़ियों के सहज गीत
स्वन स्वन में झरती,
प्रभाती की
स्वर लहरी
नई उगे पौधों का ऋचा राग
थकती जिहवाओं के मुखर मंत्र
कल की चेष्टाओं के शंखनाद
इन सबको
जो भी है जैसा है स्वीकारो
अनादृत नहीं करो
ओ पर्वत
हर नव समर्पण की अंजुरी में
बंधा है समय चक्र
इसको देते रहना
पर्वत की दृढ़ता और
कालजयी सपनों का
सतत् वृत्त

डॉ० सत्येन्द्र श्रीवास्तव, लंदन

++++++++++++++++++++

हिन्दी बाला

हिन्द हृदय में बसने वाली
कोटि जनों की प्यारी।
संस्कृत की लाडली बेटी
सहज सरस यह हिन्दी हमारी।।
मीरा ने तुम्हें लोरी सुनाई
सूर से वत्सलता पायी।
शुक्ल जी के लालन पालन में
क्या तुममें यह सुन्दरता आई।।
अक्खड़पन क्या कबीर ने दी है
यह गाम्भीर्य तुलसीदास ने
रस सागर तो बिहारी ने भरा है।
यह पॉडित्य केशवदास ने।।
पदमाकर गोपी हो या
कि गुप्त जी की उर्मिला
सुभद्रा की रानी झांसी हो
या बच्चन की मधुबाला।।?
किसने तेरा रुप दिया यह
किसने सवारा तुम्हें आली।
किसने दी तुम्हें रुन-झुन पायल
किसने ने माथे बिन्दी डाली।।
भारतेन्दु ने रुप दिया यह
प्रसाद निराला सवारे आली।
पन्त ने दी यह रुनझुन पायल
महादेवी माथे बिन्दी डाली।।
भूषण जैसा ओज है तुममें,
पाण्डेय सी ललकार।
रश्मि रथी दिनकर का
तेरी रक्षा को तैयार।।
चाह यही बस हे बाले
युग युग अक्क्षुण तव यौवन रहे।
निरखि रुप जग-जन मोहित हो।
मदहोस मनीजी मगन रहे।

डी.पी.उपाध्याय,'मगनमनिजी',
इलाहाबाद

बदलाव

एक विवश इन्सान
खूनी पगडंडी पर चलता
भूखा नंगा बेबस, असहाय
फटी कम्बल ओढ़े
फुटपाथ पर जीवन
जीने को वह विवश है।
आजादी के साठ साल बाद भी
कोई बदलाव नहीं है
उसके जीवन में।
वोटों के अधिकार ने
उसे ठगा है.
वही फटा कम्बल
फुटपाथी जिन्दगी
जीने को लाचार है।
आजादी के नाम पर
यह एक विडम्बना है

डॉ० श्याम मनोहर व्यास, राजस्थान

पारदशी-सतसई का लोकार्पण

काव्य-सृजन की शाश्वतविधाओं मं कलमकार है कवि पारदर्शी. आपने विधि रुपों में विपुल काव्य-सृजना करके सभी को चमत्कृत किया है. 'पारदर्शी-सतसई' गागर में सागर काव्य कृति है. उक्त उद्बोधन संतकवि कुदनमल डॉगी की २६वीं पुण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रम में युवा प्रवचनाकार मुनिराज श्री जयरत्नविजयजी ने कवि ऊँ पारदर्शी द्वारा प्रणीत 'पारदर्शी-सतसई' के लोकार्पण के अवसर पर कही. इस अवसर पर जीरावला, मोटेरा, अहमदाबाद, आहोर, मुम्बई, भीनमाल आदि के श्रीराजेन्द्र शांतिविहार के ट्रस्टीगण एवं स्थानीय गुरुभक्त उपस्थित थे.

क्यों बोलते है बच्चे झूठ का विमोचन

शाहजहॉपुर. बीते दिनों यहां बड़ागांव में सृजन साहित्यिक संस्था के विराट कवि सम्मेलन में युवा साहित्यकार शशांक मिश्र 'भारती' द्वारा बाल मनोविज्ञान पर लिखित पुस्तक 'क्यों बोलते है बच्चे झूठ' का विमोचन कादम्बिनी पत्रिका के मुख्य कापी सम्पादक पं. सुरेश नीरव द्वारा किया गया. कार्यक्रम में मुख्यअतिथि कृष्ण राजे सहित सुरेश फक्कड़, महेन्द्र योगी, उर्मिलेश कुमार, लक्ष्मण सिंह, शिवचन्द्र दीक्षित, सतीस शुक्ला सहित अनेक कवि, साहित्यकार व गणमान्य नागरिक उपस्थित थे. पं. सुरेश नीरव ने पुस्तक को बाल मनोविज्ञान पर एक महत्वपूर्ण कृति बतलाते हुए मील का पत्थर साबित होने की बात कहीं. वहीं गाजियाबाद से आये अरविन्द पथिक ने पुस्तक व लेखक का संक्षिप्त परिचय दिया. कार्यक्रम का संचालन युवा कवि श्रीकांत सिंह ने तथा आभार उद्यमी राजेश कुमार वैश्य ने व्यक्त किया.

भाभा एटामिक रिसर्च सेन्टर स्टॉफ क्लब में कवि सम्मेलन-१७ अप्रैल २००८

मंचासीन लता हया, महेष दुबे, हस्ती मल हस्ती, सागर त्रिपाठी, कुलवंत सिंह एवं अन्य

लाल बिहारी लाल को युवा प्रतिभा सम्मान

हम सब साथ-साथ द्वारा आयोजित अखिल भारतीय युवा प्रतिभा एवं वरिष्ठ प्रतिभा प्रर्दशन सम्मान समारोह २००८ के लिए युवा लेखक श्री लाल बिहारी लाल को कविता के लिए युवा प्रतिभा सम्मान वरिष्ठ साहित्यकार पद्म श्री डॉ० श्याम सिंह शशि एवं श्री उमाशंकर मिश्र ने संयुक्त रुप से प्रदाना किया.

मासिक कवि-गोष्ठी सम्पन्न

लखनऊ. बिसरिया शिक्षा एवं सेवा समिति के तत्वावधान में अ.भा.अगीत परिषद, लखनऊ द्वारा आयोजित मासिक कवि-गोष्ठी का आयोजन श्री सूर्य प्रसाद मिश्र के संयोजकत्व एवं डॉ० रंगनाथ मिश्र 'सत्य' की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ. मुख्य अतिथि श्री रविकान्त खरे बाबाजी, विशिष्ट अतिथि राजेश दयालु, रुद्रनाथ पाण्डेय, तथा स्वागताध्यक्ष श्री धुरेन्द्र स्वरुप विसरिया थे.

कवि गोष्ठी में डॉ० श्री कृष्ण सिंह 'अखिलेश', गिरीश चन्द्र वर्मा, अवधेश कुमार श्रीवास्तव, सूर्य प्रसाद मिश्र, शशिबाला श्रीवास्तव, वासुदेव वाजपेयी, रामबहादुर, रामानुज तिवारी, अनपढ़ अलंकारी, के.के.वैश्य, ध्रुवचन्द्र मिश्र, कुलदीप सिंह आदि ने काव्य पाठ किए.

हरिचरण वारिज को 'शाने-ए-अदब'

शबनम साहित्य परिषद, सोजनसिटी, पाली राजस्थान द्वारा भोपाल के वरिष्ठ साहित्यकार श्री हरिचरण वारिज को 'शाने-ए-अदब' से नवाजा गया. इस वर्ष ही युवा समूह प्रकाशन की गीत, ग़ज़ल, भजन प्रतियोगिता में भी प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है. श्री वारिज को गत वर्ष भारतीय सुधा रत्न-प्रयाग, साहित्य गौरव-सरिता, सुल्तानपुर, साहित्य मार्तण्ड-२००७, परियांवा,, कलम कलाधर-साहित्य संगम, विद्या वारिधि-अ.वि.स.साहित्य प्रभा, देहरादून, साहित्य गौरव, काव्य भूषण सम्मान से नवाजा जा चुका है.

कक्का को हास्य सुधाकर

सुप्रसिद्ध हास्य रचनाकार अजय चतुर्वेदी 'कक्का',सोनभद्र को अखिल भारतीय साहित्य संगम,उयपुर, द्वारा राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान-०८ के अन्तर्गत, विद्वत निर्णायक मंडल के निर्णयानुसार 'हास्य सुधाकर' की मानद सम्मानोपाधि से अलंकृत किया गया. यह सम्मान उन्हें २० अप्रैल ०८ को प्रदान किया गया.

रोहित यादव को 'ब्रज गौरव' सम्मान

वरिष्ठ पत्रकार एवं लोक साहित्यकार रोहित यादव को हिन्दी पत्रकारिता तथा साहित्य के प्रति समर्पित भाव से किए गए कार्य के लिए अ. भा. सा. संगम, उदयपुर ने अक्षरादित्य' की मानद सम्मानोपाधि, दक्षिणीा हरियाणा सांस्कृतिक मंच, द्वारा लोक साहित्य शिरोमणि, आसरा समिति द्वारा 'ब्रज गौरव, एस.एस.पी. टाईम्स ने एस.एस. पी.एचीवमेंट अवार्ड-०८, रायपुर में आयोजित अंतर्राष्टीय लघुकथा सम्मेलन में सृजन यात्री सम्मान, हिन्दी पाक्षिक कर्मवीर कैलाश ने कर्मवीर कैलाश सम्मान, सा. सा. कला संगम अकादमी, द्वारा साहित्य मार्तण्ड, रिफासिमेंटो इंटरनेशनल, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित एशिया/पेसिफिक हूज.हू वोल्यूम आठ में श्री यादव का जीवन परिचय प्रकाशित किया है.

स्वास्थ्य

घरेलू कामकाज के बोझ में सेहत से समझौता न करें

महिलाओं के लिए शादी के बाद की उम्र ऐसी होती है जिसमें या तो वह नौकरीपेशा हो जाती है या घर के कामों में ही व्यस्त रहती हैं. इस समय कामकाजी महिलाओं को अपने आहार का खास ख्याल रखना होता है. एक तो उनके पास समय कम होता है और काम ज्यादा होते है. इसलिए उनके लिए नाश्ता तो बहुत ही आवश्यक है. नाश्ता हल्का और सुपाच्य होना चाहिए. साथ ही दोपहर का खाना ऐसा होना चाहिए जिसे खाकर सुस्ती न आए और कार्यक्षमता बनी रहें.

दोपहर के भोजन में सभी पोषक तत्व विद्यमान होने चाहिए. यदि दोपहर के भोजन में सभी पोषक तत्व विद्यमान होने चाहिए. यदि दोपहर के भोजन में सभी चीजें लेना संभव न हो तो यह कमी रात के भोजन में पूरी करें. जो महिलाएं नौकरीपेशा नहीं है उनके लिए भी भोजन, नाश्ता आदि सभी संतुलित होना चाहिए. अकसर देखने में आत है कि घरेलू महिलाएं सबका तो ध्यान नही देती. कभी-कभी गलत डाइट के कारण वह मोटी भी हो जाती है. मोटापा कई बीमारियों की जड़ होता है इसलिए भोजन में छह तरह के तत्वों का समावेश होना ही चाहिए. यह छह तत्व हैं- कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, फैट, विटामिन, मिनरल और पानी।

कार्बोहाइड्रेट चीनी, स्टार्च, ग्लूकोज आदि से मिलता है. इससे शक्ति मिलती है. एक ग्राम कार्बोहाइड्रेट से चार कैलोरी मिलती है. दूध, दूध से बनें पदार्थो और अंडे से प्रोटीन मिलता है. एक ग्राम प्रोटीन से भी चार कैलोरी प्राप्त होती है. विटामिनों की प्राप्ति के लिए गाजर, पालक, खट्टे फल, केले, सब्जी, मेवे आदि का सहारा लिया जा सकता है. खनिज पदार्थो में कैल्शियम दांतो के लिए बहुत जरुरी है. इसी प्रकार लोहा खून बढ़ाने के लिए जरुरी है.

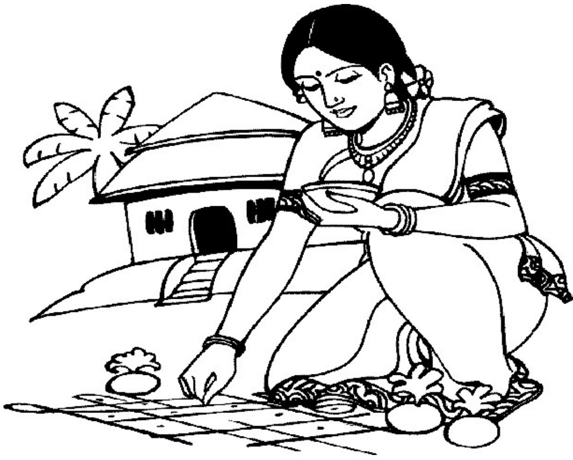

हर महिला के लिए डाइट अलग हो सकती है पर जरुरी है कि उसमें सभी चीजों का समावेश हो. एक दिन के भोजन में निम्न चीजों का समावेश होना चाहिए-

दूध व दूध से बने पदार्थ-५०० मिलीलीटर

दाल-तीस से पचास ग्राम

सब्जी-डेढ़ से दौ सौ ग्राम

नॉनवेज-एक से दो पीस

अनाज-छह से आठ

वसा- प्रतिदिन तीन से पांच छोटे चम्मच तेल

चीनी-प्रतिदिन दो से तीन छोटे चम्मच

आइए अब आपके लिए खाने का मेन्यू प्लान करते है.

मेन्यू प्लान-चाय के साथ दो बिस्किट

ब्रेकफास्ट कामकाजी महिला-दूध, दलिया या कॉर्नफलेक्स, सैंडविच, एक कप अंकुरित दाल, एक फल.

लंच-कामकाजी महिलाएं तो टिफिन ले ही जाती है. वे परांठा, सब्जी, पुलाव, दही आदि ले जा सकती है उन्हें साथ में एक फल जरुर लेना चाहिए. घरेलू महिलाए दाल, सब्जी, रोटी, चावल, रायता, दही और सलाद के साथ ही मौसमी फल भी ले सकती है.

शाम की चाय-चाय के साथ बिस्किट या नमकीन ले सकती है.

डिनर-मिक्स्ड दाल, मौसमी सब्जी, रोटी, चावल, सलाद, दही और कोई स्वीट डिश तथा फ्रूट कस्टर्ड लिया जा सकता है.

+++++++++++++++++++

क्या आप खाना दूसरों का खाते है?

क्या आप कपड़ें दूसरों का पहनते है?

तो भाषा दूसरों की क्यों प्रयोग करते है.

अपनी मातृभाषा हिंदी का प्रयोग करें

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा जारी,

चिट्ठी आई है

आप जैसे महान विभूति मनीषी को पत्र लिखकर अपने आपको गौरान्वित हो रहा हूँ

पुस्तकालय, जोधपुर में अपकी पत्रिका का अंक पढ़ने को मिला. हर्षित हुआ कि विश्व स्नेह समाज की भावना वाले श्रीमान द्विवेदी से पत्राचार द्वारा सम्पर्क किया जाये. आज मुझे खुशी है कि आप जैसे महानूविभूति मनीषी को पत्र लिखकर अपने आपको गौरवान्वित हो रहा हॅू. पत्रिका के कवर के पृष्ठ २ पर आपके जन्म दिवस की बधाई जो जून २००६ का अंक था पढ़कर आपको तुरन्त काव्य विधा में प्रेषित कर रहा हॅू. आशा है आपको अच्छी लगेगी.

पं.नारायण शर्मा कौशिक, प्र. संपादक,वेदांग ज्योति मा. मेड़ता सिटी

++++++++++++++++++++++++

कागज की क्वालिटी में सुधार करें.

पत्रिका का अप्रैल ०८ अंक मिला. पत्रिका में संकलित रचनांए अच्छी है. कागज की क्वालिटी में सुधार की गुंजाइश है. कृपा इसे नजरअंदाज न कीजिए. सिर्फ इतना ही.

अंजु दुआ जैमिनी, ८३६, सेक्टर-२१सी, फरीदाबाद-१२१००१

++++++++++++++++++++++++

डॉ० तारा को भारत रत्न जैसी सम्मानोपाधि से विभूषित किया जाय

फरवरी/मार्च ०८ डॉ० तारा सिंह विशेषांक मिला.आपके स्नेह आत्मीयता के लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी हॅू. इस विशेषांक से डॉ० तारा सिंह छायावादी कवियित्री एवं ग़ज़लकार के उच्च व्यक्तित्व के विषय में जानकारी मिली. आपने अपने सम्पादकीय लेख में डॉ० तारा सिंह जी के बारे में जो कुछ लिखा है उससे यह स्पष्ट होता है कि वे एक आदर्श महिला, आदर्श धर्मपत्नी एवं आदर्श साहित्यकार है. मैं भी परमपिता परमेश्वर से उनके व उनके शांति, समृद्धि, यश कीर्ति, सम्मान सब कार्यो में सफलता एवं उज्जव भविष्य के लिए प्रार्थना करता हॅू. उन्हें अपने कृतित्व व व्यक्तित्व के लिए भारत रत्न जैसी सम्मानोपाधि से विभूषित किया जाय और मानवता के इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जाय.

डॉ० मुरारी लाल अग्रवाल, प्र. संपादक, सतयुग की वापसी, मधुवन, अलवर

++++++++++++++++++++++

आपके द्वारा प्रेषित डॉ० तारा सिंह विशेषांक मिला. तारा सिंह जी वरिष्ठ एवं प्रसिद्ध कवियत्री है, विशेषांक द्वारा उनके बारे में बहुत ही विस्तृत जानकारी मिली. आशा है भविष्य में भी आपका स्नेह आशीर्वाद व मार्गदर्शन मिलता रहेगा,

संजय चतुर्वेदी प्रदीप, लखीमपुर खारी, उ०प्र०

++++++++++++++++++++++++

तारा सिंह जी पर विशेषांक निकाल कर सम्पूर्ण साहित्य जगत को गौरान्वित किया है.

आदरणीय श्री द्विवेदीजी

पत्रिका फरवरी अंक मिला जिसमें आपने मुम्बई की वरिष्ठ कवियत्री डॉ० तारा सिंह जी पर विशेषांक निकाल कर सम्पूर्ण साहित्य जगत को गौरान्वित किया है. जो एक चिर स्मरणीय कहना होगा जिन्होंने वास्तविक देश को कुछ दिया है. उसे आपने उजागर कर पत्रिका ने भी साहित्य जगत में अपना स्थान पाने में कोर कसर नहीं रखी है. इसी प्रकार यदि देश में साहित्यकारों, लेखकों, विचारको की इज्जत होगी तो अवश्य ही देश को नई दशा मिलती रहेगी.

कवि विनोद भटनागर अलबेला, शिवपुरी, म०प्र०

++++++++++++++++++++++

आपके सजग एवं सार्थक परिश्रम के फलस्वरुप डॉ. तारा सिंह विशेषांक प्रकाशित होकर साहित्य समाज को आलोकित कर गया. विशिष्ट सामग्री से भरपूर यह अंक अपनी एक अलग छाप छोड़ गया.

बेदिल इंदौरी, गुड़गाव

+++++++++++++++++++++++

आप द्वारा डॉ० तारा सिंह पर विशेषांक प्राप्त हुआ. आपका हिन्दी साहित्य के सम्बर्द्धन में अविस्मरणीय योगदान सराहनीय है. और भविष्य में भी रहेगा वर्तमान वैज्ञानिक संचार क्रांति के युग में साहित्य के अल्प संसाधन व अनेक अवरोध पार करते हुए पत्रिका का निरन्तर प्रकाशन किया जाना अपने आप में किसी तपस्या से कम नहीं है. डॉ० तारा सिंह के सम्मान में विशेषांक प्रकाशन जिसमें भारत के विशेष मूर्धन्य चर्चित साहित्य मनीषियों के हृदयोदगार सम्मिलित किए है. पत्रिका का भाव सौदर्य आकर्षक है.

शिवकुमार चंदन, ज्वालानगर, रामपुर, उ०प्र०

++++++++++++++++++++++

पांचवा साहित्य मेला का दस्तावेज के रुप में विशेषांक मिला है जो समारोह की पूरी जानकारी दे रहा है. आपका सफल प्रयास है. अतः बधाई स्वीकारें.

डॉ. बीजेन्द्र कुमार जेमिनी, निदेशक, जैमिनी अकादमी, पानीपत, हरियाणा

+++++++++++++++++++++++

पत्रिका का मुंबई की कवयित्री डॉ० तारा सिंह पर केन्द्रित अंक अच्छा लगा. कवयित्री के व्यक्तित्व एवं कृतत्व की पर्याप्त जानकारी मिली.

पत्रिका दीर्घजीवी हो, यही कामनाएं.

डॉ. सतीश राज पुष्कर, पटना, बिहार

आप भी अपने विचार भेजें. पत्रिका कैसी लगी, क्या परिवर्तन किया जाए, **संपादक**

लघु कथांए

गिफ्ट

उस दिन राज भाई साहब का मूड बहुत अच्छा था. मुझसे कह रहे थे, “आज मुझे तेरी होने वाली भाभी के जन्मदिन पर जाना है. उसके लिए बढ़िया सा गिफ्ट को देखेगी तो सारे जमाने मे कहती फिरेगी कि मैंने उसे कितना प्यारा गिफ्ट दिया है.”

समय जल्दी बीत जाता है. एक महीना तो पलक झपकते ही निकल जाता है. मेरे जन्म दिन पर मुझे भी एक प्यारा सा गिफ्ट मिला. चूँकि मैं राज भाई साहब को अपना बहुत खास मानता था सो उन्हें गिफ्ट दिखाने पहुँच गया. गिफ्ट देखते ही राज भाई साहब का चेहरा विक्रत हो गया. मैंने बहुत पूछा तो बड़ी मुश्किल से जवाब दिया, “यह तो वही गिफ्ट है जो मैंने तेरी होने वाली भाभी को दिया था. ऐसा लगता है कि उसने गिफ्ट देखा ही नही. उसने दूसरे को और दूसरे ने तीसरे को वही गिफ्ट दिया है. अब यह तेरे पास आई है. तू भी किसी को दे दे.”

डॉ० नरेन्द्र नाथ लाहा,ग्वालियर,मप्र.

++++++++++++++++++++

उपदेश

उस भव्य पंडाल में विद्वान महात्मा जी प्रवचन दे रहे थे, श्रद्धालु जनता उस ज्ञानगंगा में डुबकियॉं लगा रही थी. आध्यात्मिक रसमय माहौल था. उसी पंडाल में मैले-कुचैले वस्त्रों में एक भिखारी बैठा हुआ था. प्रवचन सुनकर उसकी निस्तेज ऑखों में एक विशेष चमक आ गई. प्रवचन समाप्त होने के बाद महात्मा जी अपने कैम्प में पहुँचे तो थोड़ी ही देर मे वह भिखारी भी वहॉं जा पहुँचाा और उनके चरणों में गिर पड़ा.

‘अरे तुम यहॉं कैसे आ पहुँचे-कितने गंदे हो तुम.’ मखमली गद्दे पर एयर कंडीशनर का आनन्द ले रहे महात्मा ने उसे फटकारा.

‘स्वामी जी, मैं तीन दिनों से भूखा हूँ, आपके हाथों से ही महाप्रसाद मिल जाये तो बहुत बड़ी दया होगी.’ भिखारी गिड़गिड़ाया.

‘अरे, तुम्हारा यहॉं कोई स्थान नहीं है, ...जाओ सड़क पर...वहीं भीख मॉंगों. ’ साधु ने झिड़कते हुए कहा.

‘महाराज जी, आपने ही तो अभी प्रवचन में कहा था कि सेवा और त्याग की भावना ही व्यक्ति को देवता बना देती है.’ भिखारी का निस्तेज चेहरा दीप्तमान हो उठा था.

महात्मा जी की कान्ति फीकी पड़ गई थी. उन पर सैकड़ों घड़े पानी पड़ गया था. उनके सभी शिष्य अवाक रह गये.

अखिलेश निगम ‘अखिल’, लखनऊ.

++++++++++++++++++++

भाग्य निर्मोही

दो दो बार सुहागन, और दोनों बार विधवा. वहा क्या किस्मत पाई है उसने. सावित्री विद्रूप से हंसी. दिये में तेल चूक रहा था. उसने उसे आधा भर दिया.

पहली बार उसका ब्याह किसन सिंह से हुआ था. किशन सिंह फौजी था. ब्याह के आठ दिन बाद ही कारगिल की लड़ाई शुरु हो गई. उसकी छुट्टियां रद्द कर दी गई और वह वापिस मोर्चे पर चला गया.

दो महीने बाद खबर आई कि किसन सिंह का पता नहीं चल रहा है. सरकार ने कुछ दिन उसकी तलाश की और अन्त में प्राप्त सबुतों के आधार पर उसे मृत घोषित कर दिया.

उसे मिली पेंशन/मुआवजे की रकम पर सबकी नजर थी. कोई नहीं चाहता था कि सोने की चिड़ियां हाथ से निकल जाये. एक वर्ष बाद उसके सास ससुर ने उसका ब्याह किशन सिंह के छोटे भाई बिसन सिंह ने करवा दिया. बिसन सिंह उम्र में बहुत छोटा था. कालेज छोड़कर घर को बैठा था और दिन भर जाने कहां, मारा मारा घूमता रहता था. सावित्रि के सामने, वह बहुत कम पड़ता था. अभी तक छोटे भाई की तरह प्यार करने वाले बिसन सिंह को, पति का दरजा देना, सावित्रि के लिए कभी संभव नहीं हुआ.

इसी बीच, जाने कैसे, बिसन सिंह का संबंध उग्रवादियों से हो गया. वह रात में, किसी भी समय, छिपछिपाकर घर आता. जो कुछ रसोई में बचता, खा लेता और चला जाता.

एक दिन पता चला कि पुलिस की गोली से बिसन सिंह हलाक हो गया. दूसरी बार उसे विधवा का चोला पहनना पड़ा. पुत्र शोक से, उसके सास ससुर दोनो की मृत्यु हो गई. वह घर में अकेली रह गई.

वह सोचने लगी, बचपन में ज्योतिषि ने उसे अखण्ड सौभाग्यवती होने की भविष्यवाणी की थी और यहां दो-दो बार उसका सुहाग खण्डित हो गया.

सावित्री ने एक पुरुष की तरह घर, बगीचाा, खेत सब कुछ सम्हाल लिया. साथ में रहने के लिए किसन-बिसन की दूर की रिश्ते की बुआ आ गई थी. वह दिन भर खेत में रहती. रसाईया, रसोई बनाकर चला जाता. सारी रात वह यादों की लहरों पर डूबती करवटें बदलती रहती.

किसन को गये, तीन वर्ष बीत चुके थे. जिस दिन वह लड़ाई पर गया, ऐसे ही पूनम की रात थी. वह खुली खिड़की से, चमकते चांद को देखने लगी. देखते-देखते, कब उसे झपकी आ गई, पता हीं नही चला. अचानक उसे लगा, कोई द्वारपर थपकी दे रहा है. उसकी आंख खुल गई. उसने झिर्री से झांककर देखा एक बड़ी बड़ी दाढ़ी मूछों वाला व्यक्ति बैशाखी के सहारे सामने खड़ा था.

कौन? उसने पूछा.

मैं.

जब उसने दरवाजा खोलकर गौर से देखा तो वह किशन सिंह था.

आनन्द बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र.

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नामः आंसू
लेखकः अश्वनी कुमार गर्ग
मुल्यः १२५ रुपये

अश्वनी कुमार गर्ग के प्रस्तुत कहानी संग्रह 'आंसू' में कुल ७ कहॉनिया है. आंशू नामक कहानी में लेखक ने एक जुआरी जुआ खेलने व शराब के लिए कितना गिर जाता है. अपनी बेटी को १५ हजारा रुपये में बेचने का सौदा तय कर आता है. लेखक के शब्दों में-"मुक्ता, 'मां, तू एक बात बता? क्या नारी ही रह गई है बाजार में बिकने के लिए. पुरुष क्यों नहीं बेच डालता अपने को'"

'प्यास' में लेखक ने एक फौजी की दास्ता को जो सीमा पर तैनात है. उसकी शादी तय होती है उसे सीमा पर गोली लगती है और वह मारा जाता है. दूसरी तरफ उसी फौजी की फौजी विधवा भाभी अपने देवर से छुट्टियों में घर आने पर सीमा तथा मोर्च वाली जगह की पावन मिट्टी मांगती है. "वहॉ की मिट्टी अवश्य लाना, मैं उ मिट्टी की वंदना करुंगी. जिस मिट्टी ने हमारे सैनिकों को आश्रय दिया है, सुरक्षा की और जिसने तुम्हें सुख-सुविधा दी, उसे मैं सिंदूर के समान मॉग में भरुंगी." ऐसे मर्म स्पर्शी, हृदय को छू लेने वाली कहानी है यह.

तीसरी कहानी 'मृत्यु तारे की' में आज के धनलोलुपता को दिखाया गया है. धन के लिए आदमी कितना गिर जाता है. पैसे से सम्पन्न परिवार रोटी को भी मोहताज हो दाम तोड़ देती है, लेकिन जब ताबिज टुटकर खुलती है तो पता चलता है कि वे तो सम्पनन है. लेकिन उस परिवार का बड़प्पन देखिए कि आर्थिक तंगी के कारण जहर खाने वाला तारा, अपनी जायदाद को अस्पताल के नाम करने को कहता है, दूसरा सदस्य कहता है-'मेरे पैसे को गरीबों की सहायता के लिए प्रयोग करना ताकि कोई भूख से न मरे.'

'रहस्य' में लेखक ने आज के स्वार्थी मानव की मनोदशा को दर्शाया है तो 'नूरा' में एक गरीब परिवार की लड़की नूरा जो बेहद सुंदर है, उसे पाने के लिए उसकी सुदरता ही उसकी तथा उसके पारिवार की दुश्मन बन जाती है. 'बेलू का भूत' में एक व्यापारी के छल-कपट को दर्शाया गया लेकिन उसको बेलू का लड़का भूत बनकर रहस्य उगलवाता है तो 'ममता' में लड़का होने पर पत्नी को कहता है-देखोजी, अगर लड़का हुआ तो तो मैं तुम्हें मालमाल कर दूंगा, तू कहेगी तो गहने, साड़ी सब लाकर दूंगा. लेकिन लड़की होती है. इसकी खबर सुनकर करमू सन्न रह जाता है. वह जोर-जोर से रोने लगता है. रात को अपने परिवार को छोड़कर चला जाता है.

इस संग्रह की सभी कहानियां अच्छे विषयों को लेकर लिखी गई है. यद्यपि कई कहॉनियों की विषयवस्तु काफी पुरानी है फिर भी यह संग्रह पठनीय है.

* * *

पुस्तक का नामः भविष्य से साक्षात्कार
लेखकः इंदु गुप्ता
मुल्यः २००/- रुपये
पताः ३४८/१४,फरीदाबाद, हरियाणा-१२१००७

१७५ पृष्ठीय इस लघु कथा संग्रह में करीब १३५ लघु कथाएं है. आज का पाठक बड़ी कहॉनियों को कम पढ़ना चाहता है. वह समयाभाव के कारण छोटी कहानियों को पढ़ना ज्यादे पसंद करता है और अगर लघु कथाओं के विषय सामाजिक, वर्तमान परिवेश के अनुकुल हो. आम आदमी से जुड़े हुए हो तो उसकी प्राथमिकता बढ़ जाती है. इस मापदण्ड पर लेखिका का यह संग्रह बिल्कुल खरा उतरता है. लेखिका के इस लघु कथा संग्रह में नारियों की समस्याओं पर विशेष्ज्ञ ध्यान है जो स्वागत योग्य है. सबसे बड़ी बात यह है कि लेखिका ने पुराने विषयों की ओर ध्यान न देकर एड्स, पोलियों, विदेशी संस्कृति, गरीबी सहित कई ऐसे विषयों पर लिखा है जो आज के नये विषय है. जिन पर लिखा जाना जरुरी है. यद्यपि लघु कथाओं की सूची बहुत बड़ी है. सभी लघु कथाओं पर विचार नही किए जा सकते फिर भी लघु कथाएं मुझे व्यक्तिगत रुप से पंसद आयी उनमें अनुभूति के दर्द की, एडाप्टेड डॉटर, पुत्र ऋण, कहो न दीदी, किसका कसूर, आदत से मजबूर, यूं भी हेता है, मां की जात, भविष्य नियंता, व्यवसाय सफेद पोशी का, सहारे, सेवा सुख, चमत्कार, इज्जत की रोटी, फर्क क्यों आदि है.

कुल मिलाकर अगर हम यह कहे कि प्रस्तुत संग्रह में ऐसी कोई लघु कथा नहीं है जिसे पढ़ने को जी न चाहे तो कोई अतिश्योक्ति न होगी. सभी विषय अद्वितीय है. संग्रह की भाषा सरल व बोधगम्य है. प्रस्तुत संग्रह के लिए मैं लेखिका को बहुत-२ बधाई देता हॅू और उम्मीद करता हॅू कि आगे भी ऐसे संग्रह पाठको के समक्ष प्रस्तुत करती रहेगी. इस संग्रह से अन्य लेखक भी ख्याली पुलाव के विषयों को छोड़कर धरातल के विषयों को छूने का प्रयास करेगें.

पुस्तक का नामः खाली आसमान
लेखकः देवेन्द्र कुमार मिश्रा
मुल्यः २००/- रुपये
पताः ३४८/१४,फरीदाबाद, हरियाणा-१२१००७

प्रस्तुत कहानी संग्रह की पहली कहानी ‘भूख’ दो बातों पर केन्द्रित है पहला यह कि भूख ‘पेट’ आदमी को क्या कूँछ करने को मजबूर नहीं कर देता. दूसरी पांखडियों को सचेत करती है. लेखक के शब्दों में -‘किस धर्म ग्रन्थ में लिखा है कि हाथ का छुआ खाने से पाप लगता है, जमीन में अनाज पैदा करते समय भेदभाव नहीं करते.’

‘भला कौन देखता है कि किसका खा रहा है? कौन सा इस खाने पर किसी का नाम लिखा है. जब मैं जिन्दा ही नहीं रहूँगा तो यह धर्म-ईमान, यह पण्डिताई किस काम आयेगी?’

दूसरी कहॉनी ‘पड़ोसी’ के माध्यम से लेखक ने कोर्ट-कचहरी के लफड़े से बचने की सलाह दी है. तीसरी कहॉनी ‘दीदी’ में आपने दो पड़ोसी बच्चों का आपसी प्रेम जाति/धर्म के बन्धन से परे रहता है सीख दी है तो चौथी कहॉनी रत्ना में, एक ऐसी घटना को उजागर किया है जो अक्सर देखने/सुनने को मिल जाती है. दो बच्चों की मॉ, चार बच्चों की मॉ अपने प्रेमी के साथ फरार. लेकिन आपकी इस कहॉनी में रत्ना अपने ससुराल पक्ष के पूरे परिवार के सामने अपने प्रेमी का हाथ थामें जाना और समझाने पर यह कहना कि मुझे किसी की भी परवाह नहीं है. लेकिन दूसरा पहलू पति का विचार-‘पर पुरुष के साथ रह चुकी रत्ना कोई कपड़ा तो नहीं, जो मैला हो जाये. रत्ना के पति को एक आदमी से खास आदमी बना देता है. ऐसा सुनने व देखने में ही कम ही आता है लेकिन यह भी एक अच्छा संदेश है.

जैसा कि प्रेम-विवाह में अक्सर होता है. प्रेम शादी से पहले होता है. विवाह के बाद अहं व टकराव की बात अक्सर प्रेम-विवाह करने वालों के साथ होता है और इसमें बड़े बुजुर्गो की नहीं चलती है. इसलिए ऐसे विवाह अक्सर टूट जाते है और अगर नहीं टुटते तो अलग-अलग रहने को तो मजबूर कर ही देते है. इसमें सबसे महत्वपूर्ण भूमिका होती है अहम की. प्रस्तुत कहानी प्रेम में लेखक पत्नी-पति के बीच आम नोक झोक को बड़े ही सलीके से प्रस्तुत किया है. यद्यपि विषय काफी पुराना है फिर भी इस कहॉनी में काफी कुछ नया है.

‘पारुल(अरुण की पत्नी) स्टूल पर पंजे के बल खड़ा होकर पंखे का सहारा लेकर जाला साफ कर रही होती है तभी अचानक बिजली आ जाती है. पारुल पंखे से चिपक जाती है और चिखती है.’ अरुण जो छुट्टी पर होने के कारण घर में ही बेसुध होकर उपन्यास पढ़ रहा होता है. झटके से उपन्यास फेंक कर पारुल की ओर झलांग लगा देता है जिससे दोनों जमीन पर गिर पड़ते है. दोनों एक दूसरे को बॉहों में जकड़ रक्खे है. ‘तुमसे कितनी बार कह रक्खा है बिजली जाने के बाद बटन बंद कर दिया करो’ ‘लेकिन तुम्हें तो याद रखना था कि मुझे छुड़ाने की जगह बिजली का बटन बंद करना चाहिए’

‘तुम्हें मुसीबत में देखकर सब कुछ भूल गया था.’ ‘और यदि बिजली तुम्हें पकड़ लेती तो’

‘तो क्या? जो तुम्हारा होता वही मेरा. वैसे भी मैं इस अकेलेपन से तंग आ चुका हुं.’

‘क्या इतना प्यार करते हो मुझे...... ’ दोनों एक दूसरे से गिलवे सिकवे भूल पारुल अरुण का सिर अपने सीने में छिपा उसको तसल्ली देने लगती है.

रुकी हुई जिन्दगी में लेखन ने यह दर्शाया है कि किस प्रकार एक प्रेम-विवाह एक बच्ची होने के बावजूद तलाक की कगार पर पहुँचता है और कैसे तलाक के बाद दोनों एक दूसरे के पुनः हो जाते है. यह लेखक का बड़ा ही सुन्दर प्रयास है. किसी घटना के माध्यम से एक दूसरे को मिलाना. इस कहॉनी में तलाक की शुरुआत तकरार व अहम से ही होती है लेकिन एक दूसरे के लिए दिल में थोड़ी सी जगह से फिर एक हो जाते है.

अम्मा कहॉनी में आपने सॉस-बहू के नोक-झोक को बड़े ही सलीके से सुलझाया है तो रेशमी साड़ी में एक गरीब मजदूर अपनी बीबी के लिए क्या ख्वाब देखता है. ३०० रुपये महीने कमाने वाला एक मजदूर अपनी पत्नी के लिए ४०००/-रुपये की रेशमी साड़ी खरीदने की सोचता है. उसके लिए दिन-रात मेहनत करता है, अपनी पत्नी से झूठ बोलता है. उसे मंजिल मिल भी जाती है.

यह कैसी जिन्दी है? कहानी पढ़कर मुझे प्रेमचन्द्र की कहानियों की याद आने लगती है. सच कहूँ तो इस पूरे कहॉनी संग्रह में जितना मुझे इस कहॉनी ने प्रभावित किया उतना दूसरी कहानियां नहीं. एक १८/१६ वर्ष का युवक जिसके सिर पर केवल बूढ़ी मॉ का ऑचल है, पेट भरने के लिए एक सेठ की नौकरी करता है. आज आजाद भारत की, जिसकी परिकल्पना हम २१वीं सदी का भारत के रुप में देखते है, हमारे जनप्रतिनिधियों द्वारा बड़े-बड़े दावे किये जाते रहे है. वहॉ एक आम आदमी कितना बेवस, लाचार है, जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती है. सबसे बड़ी बात है यह है कि इस कहानी संग्रह की लगभग सभी कहानियां पठनीय है और अच्छी बन पड़ी है. दूसरी बात यह कि सभी कहानियों धरातल के आसपास की नजर आती है. किसी भी कहानी में ख्याली पुलाव, कोरी कल्पना नजर नहीं आती है. इसके लिए लेखक देवेन्द्र कुमार मिश्रा को हार्दिक बधाई. है. आशा है कि आगे भी लेखक की इस तरह के कहानी संग्रह पढ़ने को मिलते रहेगें.

समीक्षकःगोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

++++++++++++++++

सम्मानार्थ प्रविष्टिया आमंत्रित है

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

साहित्य जगत में अत्यधिक लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित व अन्र्तराष्ट्रीय जगत में भी चर्चा की ओर अग्रसित विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा २००३ से लगातार साहित्यिककारों/पत्रकारों/समाजसेवियों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्न सम्मान प्रस्तावित है-

क्र.सं.	पुरस्कार का नाम	विवरण	राशि
१.	**साहित्य श्री सम्मान**	अप्रकाशित कहॉनी तीन प्रतियों में	रु०३१००.००
२.	**डॉ.रामकुमार वर्मा सम्मान**	एक नाटक तीन प्रतियों में	रु०२१००.००
३.	**बाल श्री सम्मान**	एक बाल कविता तीन प्रतियों मे	रु०११००.००
४.	**कैलाश गौतम सम्मान**	कोई एक हास्य/व्यंग्य कविता तीन प्रतियों में	कोई नहीं
५.	**डॉ.किशोरी लाल सम्मान**	श्रृंगार रस पर आधारित एक रचना तीन प्रतियों में	“
६.	**प्रवासी भारतीय सम्मान**	ऐसे प्रवासी प्रवासीय जो हिंदी की सेवा कर रहे है. किसी भी विधा में एक रचना तीन प्रतियों में सम्पूर्ण विवरण	“
७.	**अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी सेवी सम्मान**	ऐसे विदेशी अहिन्दी भाषी नागरिक जो हिंदी की किसी भी प्रकार से सेवा कर रहे है.	“
८.	**राजभाषा सम्मान**	सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारी जो अपने विभाग में हिंदी को बढ़ावा दे रहे है. सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में	“
९.	**सम्पादक श्री**	हिंदी में प्रकाशित पत्र/पत्रिका की नवीनतम तीन अंक तीन प्रतियों में	
१०.	**विधि श्री**	ऐसे विधिवेत्ता जो विधि प्रक्रिया में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दे रहे है या हिन्दी की सेवा कर रहे है.	
११.	**डॉक्टरश्री**	डॉक्टरी पेशे में रहते हुए हिंदी को बढ़ावा देने वाले हिंदी सेवी.सम्पूर्ण विवरण सहित तीन प्रतियों में	
१२.	**शिक्षक श्री**	शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दी को बढ़ावा देने वाले, सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में	
१३.	**पुलिस हिंदी सेवा पदक**	पुलिस सेवा में रहते हुए हिंदी को बढ़ावा देने वाले सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में	
१४.	**विज्ञान श्रीः**	ऐसे विज्ञान वेत्ता जो विज्ञान को हिंदी में बढ़ावा दे रहे है. सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में	
१५.	**युवा पत्रकारिता सम्मान**	पत्रकारिता के क्षेत्र में गत पॉच वर्षो में किए गये कार्यो का सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में	
१६.	**राष्ट्रभाषा सम्मान**	अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिंदी के उत्थान के लिए/हिंदी सेवा के लिए, सम्पूर्ण विवरण सहित लिखें.	
१७.	**विहिसा अलंकरण**	लेख/संस्मरण/व्यंग्य/नाटक/उपन्यास तीन प्रतियों में	

मानद उपाधियों हेतु अलग से टिकट युक्त जवाबी लिफाफे के साथ लिखें

प्रविष्टि आवेदन पत्र

सचिव
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान

विषयः..........................सम्मान हेतु प्रविष्टि।

संदर्भः
महोदय,

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के ६वें साहित्य मेला में सम्मान हेतु मैं अपनी प्रविष्टि प्रेषित कर रहा हूँ. विवरण निम्नवत है-

रचना/पुस्तक का शीर्षकः ....
प्रेषित प्रतियाः.............................. विधाः.......................धनादेश/बैक ड्राफ्ट/डी.डी.का विवरणः
राशि.................... बैंक का नामः...................... बैक ड्राफ्ट/डी.डी./चेक संख्याः.....................

मै शपथपूर्वक यह प्रमाणित करता/करती हूँ कि

१. प्रेषित रचना/पुस्तक मेरी मौलिक है.
२. मैंने संस्थान के पुरस्कार संबंधी नियम पढ़ लिए है और मैं उन्हें मान्य करता/करती हुं.

भवदीय

सलंग्नकः

१. सचित्र जीवन परिचय तीन प्रतियो में
२. टिकट लगा पता लगा लिफाफा
३. संबंधित रचना तीन प्रतियों में
४. बैक जमा पर्ची की छाया प्रति

हस्ताक्षर
पूरा नामः...........................
पताः.................................
....
दिनांकः.............................

पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा जो अंतिम व सर्वमान्य होगा. पुरस्कार हेतु प्राप्त पुस्तकें, रचनाएं लौटायी नहीं जाएगी. रचनाओं की मौलिकता को दर्शाना जरुरी है. प्रत्येक पृष्ठ पर अपने हस्ताक्षर अवश्य करें. ये पुरस्कार इलाहाबाद में गरिमापूर्ण साहित्यिक समारोह में प्रदान किये जायेंगे.

विशेषः १.सभी प्रविष्टियों के साथ एक पोस्ट कार्ड, एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा भेजें। २. प्रविष्टि के साथ २००/-रुपयें का धनादेश मनिआर्डर/बैकड्राफ्ट सचिव के नाम से भेजें. चेक सीधे अपने क्षेत्र के किसी युनियन बैक आफ इंडिया की शाखा में जमा कर छाया प्रति भेजें. ३. संस्था के युनियन बैक ऑफ इंडिया के **खाता सं.** 538702010009259 में भी जमा कर रसीद की छाया प्रति संस्था को भेज सकते है. ४. सम्मान योजना शामिल सभी साहित्यकारों को राष्ट्रीय हिन्दी मासिक ‘विश्व स्नेह समाज’ की वार्षिक सदस्यता व विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान की साधारण सदस्यता निःशुल्क प्रदान की जाएगी. जो दिसम्बर २००८ से लागू होगी. ५. प्रविष्ट्रियों के साथ सचित्र स्वविवरणीका अवश्य भेजें. ६. धनादेश को अंतिम विकल्प में रक्खें. ७. प्रत्येक प्रविष्ट्रि हेतु रचना, विवरण तीन प्रतियों में भेजना अनिवार्य है. ८. किसी अन्य प्रकार की जानकारी के लिए लिखें/ईमेल करें/देखें.

अंतिम तिथिः १५ नवम्बर २००८

कार्यालयः एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसी-09335155949 इमेलः Sahityaseva@rediffmail.com, **Website:** www.swargvibha.tk

प्रस्तावित

स्नेहाश्रम आपसे सहयोग की अपील करता है

१.स्नेहालय (अनाथाश्रम एवं वृद्धाश्रम) २.हिन्दी महाविद्यालय ३.चिकित्सालय

४.पुस्तकालय ५.प्रकाशन ६.गौशाला

इसमें समाज में तिरस्कृत वृद्धजनों व असहाय बच्चों के रहने खाने, अध्ययन, अध्यापन की सम्पूर्ण व्यवस्था, अध्यनरत छात्र/छात्राओं को अति आधुनिक पद्धति से रोजगार परक शिक्षण. अत्याधुनिक उपकरणों से परिपूर्ण गरीबों का निःशुल्क इलाज. विश्व के लगभग सभी बड़े लेखकों की पुस्तकें, पाठ्यपुस्तकों से परिपूर्ण, धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक व सभी प्रकार के प्रकाशन की व्यवस्था, दस हजार गायों को रखने की व्यवस्था तथा गौमाता के त्याज्य सामग्री को औषधीय उपयोग में लाने हेतु शोध/अनुसंधान की भी व्यवस्था.

नोटः

१.जो भी व्यक्ति/संस्था १० लाख या इससे ऊपर का सहयोग जिस मद में देगी उसके नाम पर उसका नाम रक्खा जाएगा. २.१ लाख तक का सहयोग देने वाले व्यक्ति के नाम पर कमरे का नाम, पुस्तकालय में ५ लाख देने पर पुस्तकालय का नाम उसके नाम पर कर दिया जायेगा. ३. आप सहयोग सीमेन्ट, बालू, ईट, छड़ व अन्य उपयोग की सामग्री देकर भी कर सकते हैं. ४. इन संस्थाओं को संचालन एक कमेटी के तहत किया जाएगा.

जनसहयोग द्वारा, जनसहयोग से, जन के लिए

सहयोग के लिए लिखें या मिलेंः सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान/
सचिव, जी.पी.एफ. सोसायटी
एल.आई.जी-१४४/६३, सेक्टर-२, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
email: gpfsociety@rediffmail.com,sahityaseva@rediffmail.com

क्या आप चाहते हैं कि आपका बच्चा कोई अपराधी न बनें.

क्या आप चाहते हैं कि आपका ओजस्वी बच्चा आरक्षण का शिकार न बनें तो पढ़िए

आरक्षण, जातिवाद और नारी शोषण के खिलाफ जबरदस्त आवाज बुलंद करने वाला हर युवा के दिल की आवाज, हर नारी के मन की सोच को उजागर करने वाला **गोकुलेश्वर कुमार 'राही अलबेला'**का

लघु उपन्यास

रेड इस्पेक्टर

कीमत 20 रुपये

अपनी प्रतियां बुक करायें, और हजारों के ईनाम पाए

अपनी प्रति अभी सुरक्षित करा लें. कहीं देर ना हो जाए..............

आप अपनी प्रति पोस्ट आफिस और बैंक चार्जेज से बचने के लिए यूनियन बैंक की किसी शाखा सें खाता संख्याः 538702010009259 जमा कर अपनी रसीद की कापी अपने पते के साथ कार्यालय को भेज देवें अथवा मनिआर्डर/बैक डाफ्ट. भेजें. चेक स्वीकार्य नही होगा. प्रत्येक बुकिंग का एक नंबर है, उनमें से कुछ नंबर ईनामी है.

लिखेंः **प्रसार सचिव,**
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११

डाक पंजीयन संख्याः एडी.306/2006–08 R.N.I.N0.-UPHIN2001/8380

एक कप चाय

क्या आप चाहते हैं?

कि आपका एक कप चाय का दाम किसी वृद्ध को दो वक्त की रोटी दे सके

किसी असहाय वृद्ध को सहारा दे सके?

किसी अनाथ की जिंदगी संवार सके

किसी अंधे को सहारा दे सके

किसी अनाथ को शिक्षा दे सके?

किसी असहाय महिला के तन को ढंग सके.

तो फिर देर किस बात की

आज से ही प्रतिदिन सिर्फ एक काप चाय बचाना शुरु कर दीजिए. अपनी यह बचत आप मासिक/छमाही/वार्षिक स्नेहाश्रम को भेज सकते हैं. अपना सहयोग विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से धनादेश/डी.डी./बैंक ड्राफ्ट/चेक भेज सकते हैं अथवा संस्था के यूनियन बैंक ऑफ इडिया की किसी शाखा में खाता संख्या 538702010009259 में जमा कर डी.डी./बैंक ड्राफ्ट/चेक/नगद की छाया प्रति संस्था के कार्यालय में भेज सकते है.

लिखेंः संचालक
स्नेहाश्रम
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान
एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद,उ.प्र., कानाफुसीः ०६३३५१५५६४६
email: sahityaseva@rediffmail.com

स्वामी, संपादक, प्रकाशक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93,नीम सराय, मुण्डेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित किया. आर.एन.आई यूपीहिन्दी2001/8380 डाकपंजी.सं0ः एडी.306/2006–08 **संपादकः** गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी